सेवा समर्पण

मूल्य ₹ 20

वर्ष-43, अंक-05, कुल पृष्ठ-36, पौष-माघ, विक्रम सम्वत् 2082, फरवरी, 2026

सेवा भारती द्वारा संचालित केंद्रों के बच्चों ने धूमधाम से मनाया गणतंत्र दिवस

कौशल विकास प्रशिक्षण केंद्र हेतु भूमि पूजन

राष्ट्रीय सेवा भारती द्वारा हरियाणा के झिंझोली स्थित सेवा साधना प्रशिक्षण केंद्र परिसर में प्रस्तावित कौशल विकास प्रशिक्षण केंद्र के भवन निर्माण हेतु भूमि पूजन कार्यक्रम 1 को संपन्न हुआ। कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के उत्तर क्षेत्र संघचालक माननीय पवन जिंदल जी मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे। जगुआर ग्रुप के प्रवर्तक एवं निदेशक श्री राजेश मेहरा तथा केईआई इंडस्ट्रीज़ लिमिटेड के वरिष्ठ उपाध्यक्ष (वित्त) श्री किशोर कुणाल जी विशिष्ट अतिथि रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता ईएफकेओएन के सीईओ श्री रजत मिश्रा ने की। इस अवसर पर हरियाणा के सुप्रसिद्ध गायक श्री गजेंद्र फोगाट द्वारा प्रस्तुत देशभक्ति एवं सामाजिक मूल्यों से ओत-प्रोत सांस्कृतिक कार्यक्रम ने सभी अतिथियों को विशेष रूप से प्रभावित किया। कार्यक्रम में लगभग 210 गणमान्य नागरिकों की उपस्थिति रही। प्रस्तावित कौशल विकास प्रशिक्षण केंद्र के माध्यम से युवाओं को व्यावसायिक प्रशिक्षण एवं आजीविका उन्मुख कौशल प्रदान किए जाएंगे, जिससे सामाजिक सशक्तिकरण एवं आत्मनिर्भरता को बढ़ावा मिलेगा। ❐

श्री विश्वनाथ बुक बैंक का शुभारंभ

सेवा भारती जिला गांधीनगर के मकान नंबर 18 गली नंबर 2 गुरु अंगद नगर, लक्ष्मी नगर में 31 जनवरी को श्री विश्वनाथ बुक बैंक का शुभारंभ हुआ। श्री रवि जी के सहयोग से स्थान प्राप्त हुआ है और सतीश चावला जी के सहयोग से किताबों और रैक की व्यवस्था हुई है। इस अवसर पर सेवा भारती के जिला उपाध्यक्ष श्रीपाल जी, मंत्री पंकज जी, बहन समिति अध्यक्ष सविता जी, बहन समिति मंत्री निर्मल बहन जी, निरीक्षका मयूरी जी, सीमा जी, शिक्षिका सिंपल आदि उपस्थित रहे।

सुदामापुरी में गणतंत्र दिवस पर कार्यक्रम

जिला रोहतास नगर, सुदामापुरी माधव सेवा केंद्र पर 77 वां गणतंत्र दिवस कार्यक्रम मनाया गया। कुल संख्या 55 रही। कार्यक्रम में आरती जी, अरुणा शर्मा जी, वीना जी, प्रभा जी, ललित जी, रितु जैन जी, सीमा जी, विभाग संगठन मंत्री श्री मानवेंद्र जी, जिला मंत्री राजेंद्र जी, जिला उपाध्यक्ष तीरथ राम जी आदि उपस्थित रहे।

संरक्षक
श्रीमती इन्दिरा मोहन

परामर्शदाता
डॉ. राम कुमार

सम्पादक
डॉ. शिवाली अग्रवाल

कार्यालय

सेवाकुंज, 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15
E-mail: info@sewabhartidelhi.org
Website: www.sewabhartidelhi.org

पृष्ठ सज्जा
मणिशंकर कुमार

एक प्रति : 20/-रुपये
वार्षिक शुल्क : 200/-रुपये

सेवा समर्पण

वर्ष-43, अंक-05, कुल पृष्ठ-36, फरवरी, 2026

विषय-सूची

शीर्षक	लेखक	पृ.
कुष्ठाश्रम के लिए कात्रे जी ने मांगी थी भीख	प्रतिनिधि	4
वंदेमातरम् का इतिहास	आचार्य अनमोल	9
श्रेष्ठ संत परम्परा मलिका के शिरोमणि	प्रतिनिधि	10
महान समाज सुधारक	प्रतिनिधि	12
लक्ष्य प्राप्ति के लिए दिशा हो सही	अनिल	16
प्यारी गो माता	सुदीप गर्ग	17
हिंदुत्व एक जीवन-शैली	स्वाति पाठक 'स्वाति'	18
फूल	संगीता	20
साहस, धौर्य और दूरदर्शिता के प्रतीक	कमलेश त्रिपाठी	21
आध्यात्मिक ऊर्जा और चेतना प्राप्त करने का व्रत	श्वेत कमल	23
स्वीकार है मुझे...	श्वेत कमल	24
गीजर की सावधानी	विनोद श्रीवास्तव	25
यौन शिक्षा नहीं, अपितु योग-शिक्षा चाहिए	गंगा प्रसाद 'सुमन'	26
अन्य समाचार		28

पाठकों से अनुरोध

सेवा समर्पण के सुधी पाठकों से अनुरोध है कि वे हर अंक में प्रकाशित लेखों और महापुरुषों के विचारों पर अपनी राय अवश्य भेजें।

पता : संपादक, सेवा समर्पण,
13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15, E-mail: info@sewabhartidelhi.org

कुष्ठाश्रम के लिए कात्रे जी ने मांगी थी भीख

■ प्रतिनिधि

भारत में अनेक संस्थाएं कुष्ठ रोगियों के लिए कार्य करती हैं। उनमें से एक बड़ी संस्था है- 'भारतीय कुष्ठ निवारक संघ।' यह छत्तीसगढ़ में चांपा के कात्रे नगर में स्थित है। इसका परिसर 100 एकड़ में है। इसे कुष्ठाश्रम भी कहा जाता है। 1962 में श्री सदाशिव गोविंद कात्रे द्वारा स्थापित और पद्मश्री डॉ॰ दामोदर गणेश बापट द्वारा पोषित 'भारतीय कुष्ठ निवारक संघ' आज हजारों कुष्ठ रोगियों को रोग-मुक्त कर उन्हें स्वाभिमानी जीवन दे रहा है। वर्तमान में इसके सचिव हैं वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता श्री सुधीर देव। उन्होंने बताया, ''अब तक 5,000 से अधिक कुष्ठ रोगी यहां से ठीक होकर समाज में सामान्य जीवन जी रहे हैं।'' उन्होंने यह भी बताया कि कुष्ठ रोगियों के साथ सबसे बड़ी समस्या होती है कि बीमारी होते ही घर वाले उनकी उपेक्षा करने लगते हैं और कई लोग तो घर से बाहर कर देते हैं। ऐसे में ये लोग भिक्षावृत्ति के जरिए ही जीवन-यापन करने को बाध्य हो जाते हैं। इसलिए कुष्ठ निवारक संघ ऐसे रोगियों को ठीक करने के साथ ही उनके लिए रोजगार का भी प्रबंध कर रहा है। इस कारण यहां से ठीक होकर निकले लोगों में से कोई भिक्षा नहीं मांगता। ये लोग कुष्ठ निवारक संघ की देखरेख में कहीं चॉक बनाने का काम करते हैं, तो कहीं सीमेंट की बोरियों से प्लास्टिक निकालकर रस्सी बनाते हैं। कोई जैविक खाद बनाने में लगा है, तो कोई खेती कर रहा है।

आश्रम के परिसर में एक अस्पताल है, जहां कुष्ठ रोगियों के इलाज की समुचित व्यवस्था है। रोगियों के रहने, खाने, वस्त्र आदि की पूरी व्यवस्था आश्रम ही करता है। रोगियों में अधिकतर 60 वर्ष के ऊपर के हैं। इसके बावजूद ये लोग संस्था के किसी न किसी काम में हाथ बंटाते हैं। ऐसी ही एक महिला हैं भगवन्तीन बाई। मध्य प्रदेश के गोरिला पिंडरा की रहने वाली हैं। भगवन्तीन यहां लगभग 30 साल से इलाज करा रही हैं। करीब 35 वर्ष की आयु में उन्हें कुष्ठ रोग हो गया। परिजनों ने घर से निकाल दिया तो भिक्षा मांगकर गुजारा करने लगीं। संघ के एक कार्यकर्ता ने बापट जी के

नाम उन्हें एक चिट्ठी देकर भारतीय कुष्ठ निवारक संघ में भेजा। हाथ-पैर की सारी अंगुलियां टेढ़ी हो चुकी थीं। बापट जी ने उनकी दशा देखी तो खुद ही उनका इलाज शुरू कर दिया। अब भी वह दवा खाती हैं। उनके हाथ-पैर ठीक से काम नहीं करते हैं, इसके बावजूद वह संस्था के लिए कुछ न कुछ करती रहती हैं। लोग उन्हें चाची कहते हैं। भगवन्तीन कहती हैं, ''कुष्ठ रोग ने मेरे इस जीवन को तो नष्ट कर दिया, लेकिन कुष्ठ निवारक संघ ने मुझे अगले जीवन को सुधारने का अवसर दिया। यहां दूसरों के लिए कुछ करने का मौका मिला है। उम्मीद है कि मेरा अगला जीवन सुखी और निरोगी होगा।'' 70 वर्षीय गोवर्धन भैना उर्फ दीवान जी भी 45 वर्ष से यहां रह रहे हैं। पास के ही नवागढ़ प्रखंड के निवासी हैं। इन्हें भी जब कुष्ठ रोग हुआ तो घर से निकाल दिया गया। अब इनके लिए भी यह परिसर ही सब कुछ है। इनके हाथ-पैर में भयंकर तकलीफ है। रोजाना दवाई खाते हैं। कहते हैं, ''आज तक मैंने उस अदृश्य शक्ति को तो नहीं देखा है, जिसे भगवान कहा जाता है, लेकिन बापट जी के रूप में मैंने भगवान को देखा है।'' इन दिनों दीवान जी आश्रम

के संचालन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। यही कारण है कि इतने बड़े आश्रम को चलाने के लिए कोई 'कर्मचारी' नहीं रखना पड़ता। संस्था के व्यवस्थापक नारायण देव शर्मा कहते हैं, ''कोई सामान्य व्यक्ति इस तरह के आश्रम में काम नहीं करना चाहता। इस कारण शुरू-शुरू में इसके संचालन में बहुत दिक्कत हुई। निर्णय लिया गया कि जो लोग यहां इलाज करा रहे हैं, उन्हें ही दैनिक कार्य के लिए प्रेरित किया जाए। अब तो हर कार्य चाहे खाना बनाना हो, साफ-सफाई हो, कृषि कार्य हो, कार्यालय सहायक हो या गोपालन हो, इस तरह के काम यहां इलाज करा रहे वे लोग ही करते हैं, जो कुछ करने में सक्षम हैं। चालक, इलेक्ट्रिशियन, कंप्यूटर आपरेटर और इसी तरह के अन्य तकनीकी कार्यों के लिए ऐसे ही लोगों को प्रशिक्षित कर कार्य में लगाया जाता है।''

बापट जी ने आश्रम के परिसर में गरीब और असहाय बच्चों के लिए एक निःशुल्क छात्रावास भी शुरू किया। यहां रहने वाले बच्चे विभिन्न विद्यालयों और महाविद्यालयों में पढ़ते हैं। आज यहां से पढ़कर निकले अनेक छात्र समाज जीवन के विभिन्न क्षेत्रें में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। वहीं बहुत सारे छात्र ऊंची शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

बचे ईसाइयत से बच्चे

बापट जी ने आश्रम के परिसर में गरीब और असहाय बच्चों के लिए एक निःशुल्क छात्रावास भी शुरू किया। यहां रहने वाले बच्चे विभिन्न विद्यालयों और महाविद्यालयों में पढ़ते हैं। आज यहां से पढ़कर निकले अनेक छात्र समाज जीवन के विभिन्न क्षेत्रें में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। वहीं बहुत सारे छात्र ऊंची शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। ऐसी ही एक छात्र हैं पार्वती भैना। पार्वती इन दिनों कोरबा से एलएलबी कर रही हैं। पार्वती के जन्म लेते ही कोई उसे आश्रम के पास छोड़ गया था। चूंकि इतनी छोटी बच्ची को आश्रम में रखने की कोई व्यवस्था नहीं है, इसलिए उसे एक कार्यकर्ता को पालने के लिए दे दिया गया। जब पार्वती पढ़ने योग्य हुई, तब उसकी पढ़ाई की व्यवस्था आश्रम में की गई। जिस कार्यकर्ता ने पार्वती को पाला उसकी ही जाति पार्वती को दे दी गई। पार्वती कहती हैं, ''मुझे नहीं पता कि मेरे वास्तविक माता-पिता कौन हैं और वे इस दुनिया में हैं भी या नहीं, लेकिन मुझे यह पता है कि मेरा बहुत बड़ा घर है और मेरे सगे-संबंधी भी हैं। मेरा घर भारतीय कुष्ठ निवारक संघ है और वहां के कार्यकर्ता मेरे सगे-संबंधी हैं।''

छात्रावास में रहकर पढ़े जयकिशन जायसवाल इन दिनों अरुणाचल प्रदेश में शिक्षक हैं। इनकी कहानी तो बिल्कुल फिल्मी है। इनके पिताजी वन विभाग में नौकरी करते थे। जब ये माध्यमिक विद्यालय में पढ़ते थे तब इनके पिताजी को टीबी की बीमारी हो गई। उन दिनों इस बीमारी को असाध्य माना जाता था। इस कारण इनके पिताजी ने इन्हें चांपा के एक मिशनरी छात्रावास में भर्ती करवा दिया और इलाज कराने के लिए कहीं चले गए। बेटे को कहां रखा और वे कहां चले गए, इसकी जानकारी उन्होंने किसी को नहीं दी। बाद में उनकी खोजबीन की गई तो पता चला कि वे इस दुनिया में नहीं रहे। उधर मिशन वालों ने जयकिशन के नाम पर सरकार से छात्रवृत्ति लेने के लिए उसे जनजाति बना दिया और उसका नाम जयकिशन मांझी रख दिया। इसके साथ ही उसे ईसाई भी बना दिया गया। इसी बीच उसका एक साथी किसी कारणवश आश्रम में गया। वहां उसकी भेंट बापट

2018 में डॉ. दामोदर गणेश बापट को पद्मश्री से सम्मानित करते तत्कालीन राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद

आश्रम के परिसर में बने बालगृह के बाहर बच्चे और अन्य लोग

जी से हुई। उसने बापट जी को मिशन की सारी बात बताई। इसके बाद एक दिन वह जयकिशन को भी लेकर बापट जी से मिला। बापट जी ने दोनों को भरोसा दिलाया कि उनकी शिक्षा से लेकर रोजगार तक की व्यवस्था भारतीय कुष्ठ निवारक संघ करेगा। इसके बाद जयकिशन और उसके साथी आश्रम के छात्रवास में आ गए। यहीं रहकर उन्होंने ऊंची शिक्षा प्राप्त की। इसके बाद बापट जी ने जयकिशन को विवेकानंद केंद्र, कन्याकुमारी भेजा। वहां उन्होंने कुछ दिनों तक सेवा की। इसके बाद विवेकानंद केंद्र ने उन्हें अरुणाचल प्रदेश में चल रहे अपने विद्यालय में पढ़ाने के लिए भेज दिया। उनकी पत्नी भी उसी विद्यालय में शिक्षिका हैं। जयकिशन कहते हैं, ''मैं यदि भारतीय कुष्ठ निवारक संघ से नहीं जुड़ता तो आज एक ईसाई होता और भारत के लिए शायद वह नहीं कर पाता, जो आज कर रहा हूं।''

आज जयकिशन के लिए भी भारतीय कुष्ठ निवारक संघ ही घर है। वे जब भी घर के नाम पर अरुणाचल प्रदेश से आते हैं, तो कुष्ठ निवारक संघ में ही आते हैं। उनका और कोई दूसरा ठौर नहीं है। भारतीय कुष्ठ निवारक संघ से पढ़े संतोष यादव भारतीय सेना में 16 साल तक नौकरी करके सितंबर, 2021 में वापस आए हैं। वे कहते हैं, ''यदि कुष्ठ निवारक संघ नहीं होता तो शायद मैं पढ़ भी नहीं पाता और नौकरी करने का तो कोई मतलब ही नहीं था। भारतीय कुष्ठ निवारक संघ जैसा और कोई संगठन नहीं है।'' बापट जी ने ऐसे सैकड़ों बच्चों का जीवन सुधारा।

श्री सदाशिव गोविंद कात्रे जी ने तीन कुष्ठ रोगियों की सेवा शुरू की। इसके साथ ही 'भारतीय कुष्ठ निवारक संघ' का जन्म हुआ। आश्रम को चलाने के लिए कात्रे जी आसपास के गांवों में जाते और लोगों से मदद करने की अपील करते। कई लोग उनकी मदद करते, तो कुछ उन्हें झिड़क देते। सीधे शब्दों में तो कहें तो कात्रे जी ने इस संगठन को चलाने के लिए भीख तक मांगी।

ऐसे हुई स्थापना

भारतीय कुष्ठ निवारक संघ की स्थापना श्री सदाशिव गोविंद कात्रे ने 1962 में की। इसके पीछे एक बहुत ही मार्मिक घटना है। कात्रे जी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक थे और उन दिनों झांसी में रेलवे में कार्यरत थे। अचानक उन्हें कुष्ठ रोग हो गया। इसके बाद रेलवे के साथी कर्मचारी और उनके घर वाले भी उनसे दूरी बनाने लगे। उन दिनों झांसी में उनके साथ केवल उनकी एक बेटी थी, पत्नी का निधन हो गया था। लोगों की उपेक्षा से वे बेचैन हो गए। एक दिन उन्होंने अपनी बेटी को छात्रावास में भर्ती कराकर इलाज कराने के लिए बैतलपुर के एक ईसाई अस्पताल में गए। वहां उन्होंने देखा कि जो लोग ईसाई बन गए हैं, उनके लिए अलग अच्छी व्यवस्था है और जो लोग ईसाई नहीं हैं, उनकी उपेक्षा की जा रही है, ताकि वे ईसाई बन जाएं। यह बात उन्हें अच्छी नहीं लगी। उन्होंने इसकी शिकायत मध्य प्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल हरिविष्णु पाटसकर से मिलकर की। पाटसकर जी ने उनसे कहा कि वह निजी अस्पताल है। इसलिए सरकार उस पर कुछ नहीं कर सकती। इसके साथ ही उन्होंने उनसे यह भी कहा कि यदि वहां भेदभाव होता है, तो तुम एक ऐसा ही अस्पताल क्यों नहीं बनाने का प्रयास करते, जहां किसी के साथ कोई भेदभाव नहीं होगा।

कात्रे जी को उनकी यह बात अच्छी लगी। इसके बाद वे नागपुर में संघ के तत्कालीन सरसंघचालक श्रीगुरुजी से मिले और उन्हें बताया कि

कुष्ठ रोगियों के लिए एक अस्पताल खोलने का विचार है। श्रीगुरुजी ने उनसे कहा कि अस्पताल के संचालन की पूरी जानकारी लेने के बाद ही कुछ करो। इसके साथ ही उन्होंने कात्रे जी को अमरावती में 'तपोवन' नाम से एक संस्था चलाने वाले शिवाजीराव पटवर्धन के नाम से एक पत्र देकर उन्हें उनके पास भेज दिया। कात्रे जी वहां नौ महीने तक रहे और अस्पताल संचालन के बारे में सारी जानकारी ली। इसके बाद वे एक बार फिर से श्रीगुरुजी से मिले। इस बार श्रीगुरुजी ने कात्रे जी को चांपा के कुछ संघ कार्यकर्ताओं के नाम एक पत्र दिया और कहा कि वहां जाकर उनकी मदद से अपना कार्य शुरू करें। वह वर्ष था 1961 का। कात्रे जी वहां गए। इसके कुछ दिन बाद ही 1962 के आम चुनाव की घोषणा हुई। जनसंघ के एक कार्यकर्ता जीवनलाल साह को टिकट मिला तो उन्होंने कात्रे जी से निवेदन किया कि वे चुनाव तक कार्यालय का कार्य संभाल दें। कात्रे जी तैयार हो गए और चुनाव में उनकी मदद की। संयोग से जीवनलाल साह चुनाव जीत गए। इसके बाद उन्होंने अपने एक मित्र से कात्रे जी का सहयोग करने को कहा।

आश्रम के परिसर में एक अस्पताल है, जहां कुष्ठ रोगियों के इलाज की समुचित व्यवस्था है। रोगियों के रहने, खाने, वस्त्र आदि की पूरी व्यवस्था आश्रम ही करता है। रोगियों में अधिकतर 60 वर्ष के ऊपर के हैं। इसके बावजूद ये लोग संस्था के किसी न किसी काम में हाथ बंटाते हैं।

उनका एक छोटा भूखंड चांपा नगर से सात किलोमीटर की दूरी पर था, वहां एक झुग्गी भी थी। उसी को उन्होंने कात्रे जी को दे दिया। वहीं कात्रे जी ने तीन कुष्ठ रोगियों की सेवा शुरू की। इसके साथ ही 'भारतीय कुष्ठ निवारक संघ' का जन्म हुआ। बाद में स्थानीय लोगों ने भी इसके लिए जमीन दी। आश्रम को चलाने के लिए कात्रे जी आसपास के गांवों में जाते और लोगों से मदद करने की अपील करते। कई लोग उनकी मदद करते, तो कुछ उन्हें झिड़क देते। सीधे शब्दों में तो कहें तो कात्रे जी ने इस संगठन को चलाने के लिए भीख तक मांगी। बाद में वे अपने विचार परिवार के कार्यकर्ताओं के घर जाने लगे और वहां एक मटका रख देते। फिर वे महिलाओं से आग्रह करते कि मटके में प्रतिदिन एक मुट्ठी चावल रख दें।

जब यह भर जाएगा तो मैं खुद ले जाऊंगा। इससे आश्रम में रहने वाले लोगों के भोजन का प्रबंध हुआ। जैसे-जैसे आश्रम का काम बढ़ने लगा तो और चीजों की आवश्यकता होने लगी। कात्रे जी ने लोगों से आग्रह किया कि एक रुण महीने या 12 रुण सालाना मदद दें। दान का एक पैसा भी वे अपने लिए खर्च नहीं करते। उल्टे वे अपनी पेंशन को भी लोगों की सेवा में खर्च कर देते।

बापट जी का पदार्पण

आश्रम में बने तुलसी चौरा के पास की एक गतिविधि

एक रोगी होते हुए भी कात्रे जी दिन-रात मेहनत करते। इस कारण कुछ वर्षों बाद वे पूरी तरह अशक्त हो गए। उन्होंने श्रीगुरुजी से आग्रह किया कि आश्रम को चलाने के लिए एक कार्यकर्ता भेजें। उनके आग्रह पर ही 1972 में डॉण् दामोदर गणेश बापट को वनवासी कल्याण आश्रम से मुक्त कर चांपा भेजा गया। वे वनवासी कल्याण आश्रम में पढ़ाने का काम करते थे। इससे पहले 1970 में उन्होंने रायगढ़ से जशपुर जाते समय चांपा रेलवे स्टेशन पर कुष्ठ रोगियों की पीड़ा देखी

आश्रम का पुराना स्वरूप

थी। उस समय वे आश्रम जाकर कात्रे जी से भी मिले थे। इसलिए उन्हें कुष्ठ रोगियों के बारे में पूरी जानकारी थी। यही कारण है कि जैसे ही उन्हें इस काम के बारे में बताया गया वे सहर्ष तैयार हो गए। इसके बाद उन्होंने कुष्ठ रोगियों की सेवा को ही अपने जीवन का उद्देश्य बना लिया। इसे उन्होंने 2019 के अगस्त महीने के उस समय तक निभाया जब तक कि उनकी अंतिम सांस नहीं निकल गई। वे स्वयं कुष्ठ रोगियों की मरहम-पट्टी किया करते थे। इसके साथ ही उन्होंने कुष्ठ रोगियों के स्वस्थ बच्चों की पढ़ाई की भी व्यवस्था की। आज ऐसे अनगिनत बच्चे पढ़-लिखकर देश की सेवा कर रहे हैं। उनकी यह नि:स्वार्थ सेवा 45 वर्ष तक चली। इसे देखते हुए ही उन्हें 2018 में भारत सरकार ने पद्मश्री से सम्मानित किया।

बापट जी मूल रूप से महाराष्ट्र के अमरावती जिले के ग्राम पथरोट के रहने वाले थे। उनका जन्म 29 अप्रैल, 1935 को एक साधारण परिवार में हुआ। पिता गणेश विनायक बापट रेलवे में थे और मां लक्ष्मीबाई गणेश बापट घर संभालती थीं। बापट जी ने एमण कॉम करने के बाद बालासाहब देशपांडे के आह्वान पर समाज सेवा करने का निर्णय लिया।

आज बापट जी के खून-पसीने के बल पर ही भारतीय कुष्ठ निवारक संघ रूपी विशाल वट वृक्ष तन कर खड़ा है और इस पर अनगिनत पक्षियों का डेरा है।

शिक्षा

■ **संगीता कपूर**

एक राजा था। उसके कोई संतान नहीं थी। राजा को एक तांत्रिक ने बताया कि आप को एक बच्चे की बलि देनी पड़ेगी। अगले दिन राजा ने ढिंढोरा पिटवा दिया कि जो अपना बच्चा देगा उसे बहुत सारा धन दूंगा। यह सुन कर एक गरीब परिवार ने अपना बच्चा दे दिया। राजा ने उस बच्चे से पूछा कोई आखरी इच्छा है तो बताओ। बच्चा बोला मुझे गीली मिट्टी चाहिए। राजा ने गीली मिट्टी मंगवा दी बच्चे ने उस मिट्टी से चार घर बनाये। फिर एक-एक करके तीन घर तोड़ दिए। चौथे घर के पास बैठकर भगवान से प्रार्थना की फिर राजा से बोला अब आप बलि चढ़ा सकते हैं। राजा यह देख कर डर सा गया। उसने बच्चे से पूछा यह सब क्या है। बच्चा बोला पहला घर मेरे माँ-बाप का है, जिन्होंने पैसे के लालच में मेरी बलि चढ़ा दी। दूसरा मेरे रिश्तेदारों का था, जिन्होंने मेरे माँ-बाप को भी नहीं समझाया। तीसरा घर आपका जिसका काम प्रजा की रक्षा करना है। आप तो रक्षक से भक्षक बन गए। चौथा घर मेरे भगवान का है, मैंने उन्हें बोला अब तू ही संभाल। यह सुनकर राजा की आंखों में आंसू आ गये। राजा ने बच्चे को गले लगा लिया और कहा आज से तू ही मेरा बेटा है। मैं कितनी बड़ी भूल करने जा रहा था।

राजा ने कहा मेरे न्याय में गलती हो सकती है ऊपर वाले की डायरी में गलती की कोई संभावना नहीं है। झुकना है तो परमपिता परमेश्वर के आगे झुको। दुनिया तो अपने मतलब के लिए कुछ भी कर सकती है। स्मरण करना है तो परम पिता का स्मरण करो। दुनिया आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकती। ❐

वंदेमातरम् का इतिहास

■ आचार्य अनमोल

नवंबर 2025 में राष्ट्रगीत वंदेमातरम् की रचना के 150 वर्ष पूर्ण हुए हैं। देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत बाबू बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय ने 7 नवम्बर 1875 को वंदेमातरम् की रचना की। यह बहुत बड़ी बात है कि भारत की संस्कृति, भारत की मानसिकता, भारत के ज्ञान गौरव की महिमा बताने वाले इस वंदेमातरम् के 150 साल पूरे होने पर भारतीय जनमानस में और विशेषकर राष्ट्रवादी विचारधारा के लोगों में उत्साह है। यह गीत भारतीय जनमानस के हृदय को तथा देशभक्ति की भावना को सम्मानित करने वाला है। सही अर्थों में देखा जाए तो वंदेमारतरम् केवल काव्यात्मक पंक्तियों वाला एक गीत ही नहीं है, अपितु यह देशभक्ति का प्रेरणापुंज है, यह आपसी भाईचारे तथा एकता का मंत्र है। इस राष्ट्रगीत के सभी शब्द राष्ट्रीय विचारधारा के भावों से आच्छादित हैं। इसी कारण अपने मूल सृजन से लेकर आज तक भारत की एकता, विविधता और सांस्कृतिक धरोहर का प्रतीक बना हुआ है।

अंग्रेजों ने अपने क्रूर शासन में भारत की सांस्कृतिक और सामाजिक एकता को खण्डित करने का प्रयास किया। समाज में भारतीयता के भाव को समाप्त करने या उसको छिन्न-भिन्न करने के लिए अंग्रेज तरह-तरह के हथकण्डे अपनाते रहे। उसी दौर में बंगाल के सरकारी अधिकारी वंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय के हृदय में अंग्रेज सरकार के एक फैसले से क्षोभ उत्पन्न हो गया। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम 1857 के बाद ईस्ट इण्डिया कंपनी ने "गाड सेव द क्वीन" को सरकारी स्तर पर कार्यालयों, शिक्षण संस्थाओं में गाना अनिवार्य कर दिया। इस गीत में ब्रिटेन की महारानी की रक्षा की ईश्वर से कामना की गई थी।

इस घटना से बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय बहुत आहत हुए, उनका हृदय अंग्रेजों के प्रति क्षोभ से भर उठा। उसी समय उन्होंने भारत माता की स्तुति में देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत वंदेमातरम् की रचना कर दी।

वंदेमारम् को कांग्रेस के अधिवेशन में प्रथम बार कलकत्ता में 1876 में गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर ने गाया। इसके बाद यह कांग्रेस के अधिवेशनों में परंपरागत रूप से गाया जाने लगा। वर्ष 1901 में भी कलकत्ता अधिवेशन में चरणदास ने गाया। वर्ष 1905 में वाराणसी में आयोजित अधिवेशन में

सरला देवी ने गायन किया। वर्ष 1923 में गायन के समय इसका विरोध हुआ। वंदेमातरम् की प्रबल राष्ट्रीय भावना के प्रकटीकरण के लिए ही स्वतंत्रता सेनानी लाला लाजपत राय ने अपने समाचार पत्र का नामकरण ही "वंदेमातरम" किया। अंग्रेजों की गोली लगने से शहीद हुई क्रातिकारी मांतगिनी हजारा ने "वंदेमातरम्" का उद्घोष करते हुए अपने प्राण त्याग दिए थे। जर्मनी में मैडम भीकाजी कामा ने "वंदेमातरम्" लिखा तिरंगा स्टट गार्ड में फहराया था। इसे जब बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय ने अपने उपन्यास "आनन्द मठ" में 1882 में शामिल किया तो यह क्रांति गीत बन गया।

इस गीत ने ही राजनीतिक दूरियाँ मिटा दीं थीं, उत्तर से दक्षिण तक पूर्व से पश्चिम तक राष्ट्रीय एकता का संदेश और क्रांति की प्रेरणा दी। गुलामी की बेडियों में जकड़ी भारत माँ को मुक्त कराने के लिए क्रांति कर दी थी। लाखों युवाओं को क्रांति की मशाल हाथ में थमा दी थी, और वे स्वतंत्रता का लक्ष्य लेकर निकल पड़े थे। यह अत्यंत दुर्भाग्य और राष्ट्रीय एकता में वेदना का स्वर है कि वंदेमातरम् को आज कुछ लोगों द्वारा स्वीकार नहीं किया जा रहा है। राजनीति में तुष्टिकरण के विद्रूप स्वरूप के वशीभूत कुछ तथाकथित सेकुलर लोगों द्वारा अपने शासनकाल में वंदेमातरम् को खण्डित कर दिया था। वर्तमान में राजकीय स्तर पर केवल आरम्भिक दो छन्द ही बोले जाते हैं। सम्पूर्ण और अखण्डित वंदेमातरम् आज भी राजकीय मान्यता से बाहर है। इसे राष्ट्रगीत का स्थान तो है लेकिन, उसके केवल एक संक्षिप्त अंश को ही गाया जाता है।

श्रेष्ठ संत परम्परा मलिका के शिरोमणि

■ प्रतिनिधि

विक्रम संवत् 1433 की माघ पूर्णिमा को काशी में जन्मे संत रैदास को ही रविदास भी कहा जाता है। उनके लाखों भक्त थे। इसको देखते हुए कुछ कट्टरवादियों ने उन्हें मुसलमान बनाने का प्रयास किया। उन्हें लगता था कि संत रैदास के मुसलमान बनने से उनके लाखों भक्त भी मुसलमान बन जाएंगे। किन्तु संत रैदास की श्रद्धा और निष्ठा को हम अटूट पाते हैं। सदना पीर इनको मुसलमान बनाने आया था, किन्तु उनकी ईश्वर-भक्ति और आध्यात्मिक-साधना से प्रभावित होकर सदना पीर हिन्दू होकर रामदास नाम से उनका शिष्य बन गया। एक ओर तो वे जातिगत भेद, ढोंग, कर्मकांड आदि के विरोध में संघर्ष करते हैं, किन्तु वैदिक धर्म के दार्शनिक पक्ष में अपनी पूर्ण आस्था बराबर रखते हैं।

सिकन्दर लोदी उनको मुसलमान बनाने के लिए प्रलोभन तथा दबाव दोनों की नीति अपनाता है, लोगों को उनके पास भेजता है, किन्तु उनका उत्तर सीधा-सपाट है। वे बार-बार हिन्दू धर्म में अपनी श्रद्धा, निष्ठा तथा आस्था व्यक्त करते हैं। उनकी दृष्टि तथा सोच स्पष्ट है-

वेद वाक्य उत्तम धरम, निर्मल वाका ज्ञान।
यह सच्चा मत छोड़कर, मैं क्यों पढ़ूं कुरान।
स्तुति-सास्त्र-स्मृति गाई, प्राण जाय पर धरम न जाई।
कुरान बहिश्त न चाहिए, मुझको हूर हजार।
वेद धरम त्यागूं नहीं, जो गल चलै कटार।
वेद धरम है पूरण धरमा, करि कल्याण मिटावे भरमा।
सत्य सनातन वेद हैं, ज्ञान धर्म मर्याद।
जो ना जाने वेद को, वृथा करे बकवाद।

(हमारे साधु संत, भाग-1, पृ. 22-23)

धर्म परिवर्तन से मना करने पर सिकन्दर लोदी ने संत रैदास को कठोर दण्ड देने की धमकी दी तो उन्होंने निर्भीकता के साथ उत्तर दिया-

मैं नहिं दब्बू बाल गँवारा, गंग त्याग गहूँ ताल किनारा।
प्राण तंजू पर धर्म न देऊँ, तुमसे शाह सत्य कह देऊँ।
चोटी शिखा कबहुँ नहिं त्यागँ, वस्त्र समेत देह भल त्यागँ।
कंठ कृपाण का करौ प्रहारा, चाहें डुबावो सिन्धु मंझारा।।

(वही, पृ. 23)

भक्ति रस की निर्मल गंगा

मुस्लिम आतंक के उस कठिन काल में भी संत रैदास ने सच्ची भक्ति की निर्मल गंगा प्रवाहित कर दी। उन्होंने सैकड़ों भक्ति पदों की रचना की और उन पदों को भाव-विभोर होकर वे गाते थे। वे अपने इष्ट को गोविन्द, केसव, राम, कान्हा, बनवारी, कृष्ण-मुरारी, दीनदयाल, नरहरि, गोपाल, माधो आदि विविध नामों से सम्बोधित करते हैं, किन्तु उनका ईश्वर मन्दिर में मूर्ति की तरह विराजित भगवान से भिन्न है। वह तो घट-घट वासी निराकार ब्रह्म की सुन्दर प्रतीति हैं।

भक्त रैदास परमहंस की निस्पृह स्थिति में पहुँच गए। वे कहते हैं कि मैंने संसार के सब रिश्ते-नाते तोड़ दिये हैं, अब तो केवल प्रभु चरणों का ही सहारा है:

मैं हरि प्रीति सबनि सौं तोरी,
सब सौं तोरी तुम्हें संग जोरी।
सब परिहरि मैं तुमहीं आसा,
मन बचन क्रम कहै रैदासा।।

(वही, पृ. 51)

भक्त रैदास के अभीष्ट राम हैं, सर्वव्यापी राम। उसी भक्ति के सहारे वे जीवन के सारे कार्य कर रहे हैं। उनके सभी कार्य राम को समर्पित हैं। उनका अपना कुछ भी नहीं, जो भी कुछ है वह राम का ही है-

राम नाम धन पायौ तार्थे, सहज करूँ व्यौहार रे।
राम नाम हम लादयौ ताथै, विष लाद्यौ संसार रे।।

(वही, प.79)

भक्ति से ही तो प्रभु हैं -

भक्ति वह मार्ग है जो धीरे-धीरे साधक को प्रभु से जोड़ता है और भक्त का अधिकार अपने प्रभु पर बढ़ता चलता है। भक्ति की पराकाष्ठा देखिये कि रैदास कह उठते हैं कि भगवान् आपकी सार्थकता के लिए हम आवश्यक हैं। भक्ति से परिपूर्ण रैदास अधिकार-पूर्वक अपने प्रभु से जुड़े हुए हैं और कहते हैं कि राम नाम की जो रट लगी है वह कैसे और क्यों छूटेगी। यह निरंतरता कैसे टूटेगी, जब ध्यान है कि हम प्रभु की सार्थकता के लिए सार्थक हैं। प्रभुजी आप चन्दन हैं तो हम पानी हैं, हम आपके साथ मिलकर घिसेंगे। तभी तो आपकी सुगन्ध सभी ओर फैलेगी। आप जल भरे मेघ हैं तो हम मोर हैं। हमारे नृत्य करने से ही तो आपकी शोभा होती है। आप चन्द्रमा हैं तो हम चकोर पक्षी हैं। चकोर की आँखें ही चन्द्रमा की शीतलता का अनुभव करती हैं। प्रभुजी आप दीपक हैं तो हम उसकी बाती हैं, बाती के बिना कैसे प्रकाश मड़ देगा दीपक? आप मोती हैं तो हम धागा हैं किन्तु बिना धागा प्रभु के गले का हार कैसे बनेगा? आप स्वर्ण हैं तो हम सुहागा हैं। हमारे बिना सोना चमकेगा कैसे? प्रभुजी आप स्वामी हैं और हम दास हैं।

संत रैदास प्रभु के साथ घुल-मिल गए, एकाकार हो गए। भक्त रैदास ने ऐसा सम्बन्ध जोड़ा है कि प्रभु को यदि प्रभु बनना है तो भक्त रैदास साथ रहेगा, एक क्षण को भी रैदास प्रभु को छोड़ना नहीं चाहते। एक पद में वे गाते हैं-

जो हम बाँधे मोह फाँस हम प्रेम बंधनि तुम बांधे।
पने छूटन को जतन करह हम छूटे तुम आराधे।।

(संत और सूफी साहित्य, पृ. 122)

अर्थात 'हे माधव! यदि तुमने मुझे संसार के मोह में बाँध रखा है तो मैंने भी अपने प्रेम से बाँध रखा है। मैं तो तुम्हारी आराधना करके बंधन मक्त हो गया हूँ (मेरा भवपाश अवश्य कटेगा), अब प्रभु आप अपने छूटने का उपाय से आप कैसे छूटोगे?

भक्त रैदास ने अपने जीवन में यह सिद्ध कर दिया कि त्याग, समर्पण और भगवद्भक्ति से व्यक्ति ऊँचा उठता चलता है और फिर उसकी जाति महत्वहीन हो जाती है।

भक्त रैदास का भक्तिभाव देखकर काशी नरेश उनके शिष्य बन गए। चित्तौड़ के महाराणा उदय सिंह की पत्नी झाली रानी संत रैदास की शिष्या हो गयीं। कुछ इतिहासकार उस झाली रानी को राणा कुम्भा की माँ तथा कोई उसको राणा सांगा की धर्मपत्नी समझते हैं। संत नाभादास ने भक्तमाल में इसका वर्णन किया है:

बसत चित्तौर माँझ रानी एक झाली नाम।
नाम बिन काम खालि आनि शिष्य भई है।।

(संत रैदास, पृ. 23)

देशभर में प्रतिष्ठा प्राप्त, ऐश्वर्य, शक्ति-सम्पन्न चित्तौड़ की कुलवधू मीरा ने भी भक्त रैदास को ही अपना गुरु स्वीकार किया। कृष्णभक्ति में आकंठ डूबी मीरा अनेक प्रकार का विरोध सहन करती हुई भक्त रैदास की शरण में आ गयीं। उन्हीं से मीरा ने आशीर्वाद पाया और भक्ति में लीन हो गई। मीरा और भक्त रैदास का मिलन सगुण और निर्गुण भक्ति-धाराओं का मिलन तो है ही, साथ ही साथ जातिगत आधार पर भेद मानने वालों को एक सुन्दर अनुकरणीय सीख भी है।

यह शाश्वत सत्य है कि अपनी जाति के कारण किसी व्यक्ति ने इतिहास में अपना स्थान नहीं बनाया। स्वामी रामानन्द ने धन्ना (जाट), सेना (नाई), रैदास (चर्मकार), कबीर (जुलाहा) को शिष्य क्यों बनाया? मेवाड़ के राणा परिवार की वैभव सम्पन्न कुलवधू मीरा, काशी नरेश तथा झाली रानी ने संत रैदास को क्यों अपना गुरु बनाया? व्यक्ति को बड़ा बनाने का कार्य उसकी ईश्वर-भक्ति, विद्या, कर्मठता, चरित्र, श्रद्धा, उदारता, कर्तव्यपरायणता तथा मानवीय पहलू ही करते हैं, उसकी जाति नहीं। इसीलिए भक्त रैदास ने कहा है- जाति से कोई पद नहीं पहुंचा।

रविदास स्वभावतः मानवतावादी थे। इसलिए भक्ति के द्वारा प्रज्ञा और चेतना की पूर्ण अधिकारिता के प्राप्त होने के पश्चात भी समाज की दीनहीन- अवस्था, दुर्दशा और भेद-भाव उनकी आंखों से ओझल नहीं हो सके थे। संत रविदास मूलतः भक्त थे। कवि या साहित्यकार नहीं थे उनका उद्देश्य साहित्य सृजन नहीं था उनकी रचनाएं तो उनकी प्रेमानुभूति और रहस्यानुभूति की सहज अभिव्यक्ति थीं। ❐

महान समाज सुधारक

■ प्रतिनिधि

आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती हैं, जिनकी गणना संसार के महानतम शिक्षकों और उद्धारकों में होती है। उन्होंने लोगों को अंधकार से प्रकाश की ओर, असत्य से सत्य की ओर और मृत्यु से अमरता की ओर जाने में सहायता की। आर्य समाज कोई नया पंथ, सम्प्रदाय अथवा धर्म नहीं है। महर्षि दयानन्द ने स्पष्टत: कहा है कि आर्य समाज की स्थापना करके उन्होंने कोई नवीन पंथ नहीं चलाया, अपितु प्राचीन वैदिक धर्म, वैदिक संस्कृति, सभ्यता और परम्परा की पुन: स्थापना की है।

उनका उद्देश्य केवल यह था कि समय बीतने के साथ-साथ सच्चे सनातन धर्म और उसके अनुयायियों में जो अवैदिक बातें, अंध परम्पराएं, रूढ़ियां और सामाजिक कुरीतियां आ गई हैं उन्हें दूर किया जाए और विशुद्ध वैदिक धर्म जन-साधारण के समक्ष रखा जाए।

इसी कार्य की पूर्ति के लिए महर्षि दयानन्द ने 1875 ई में बम्बई में प्रथम आर्य समाज की स्थापना की। उसके बाद स्वयं स्वामी जी ने लाहौर, फ़र्रूख़ाबाद, मेरठ, रुड़की, लखनऊ, दिल्ली, अजमेर, आदि में आर्य समाजों की स्थापना की। वे जहां जाते, व्याख्यान देते और शास्त्रार्थ करते थे, वहीं समाज की स्थापना हो जाती थी। उनके निर्वाण के पश्चात तो समाजों की स्थापना का तांता ही लग गया।

महर्षि दयानन्द की एक बड़ी विशेषता यह थी कि वे प्रत्येक व्यक्ति और समाज की सर्वतोमुखी उन्नति चाहते थे। वह चाहते थे कि व्यक्ति और समष्टि के शरीर, मन और आत्मा सब स्वस्थ हों और सब एक ही परिवार के सदस्यों के रूप में प्रभु की छत्रछाया में मिलकर प्रेम पूर्वक रहें और एक-दूसरे की उन्नति, योगक्षेम और रक्षा में योगदान करते रहें। उन्होंने स्वयं इस बात पर बल दिया और बाद में आर्य समाज ने अपने धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और नैतिक सभी प्रकार के कार्यक्रमों में और सुधारों में इस बात का ध्यान रखकर उसे मूर्त रूप देने का यत्न किया। इस प्रकार आर्य समाज को विश्व आन्दोलन का रूप मिला। स्वामी जी महाराज मुख्यत: देशवासियों को अपनी तथा देश की हर प्रकार की उन्नति और योग क्षेत्र के लिए आर्य समाज में प्रविष्ट होने और उसके साथ मिलकर काम करने की

प्रेरणा दिया करते थे। आर्य समाज की आधार-शिला वेद, वैदिक शिक्षाएं शाश्वत, वैज्ञानिक, दार्शनिक, सार्वभौम, उदात्त वैदिक सिद्धान्तों से समन्वित सत्यार्थप्रकाश तथा स्वामी जी के उपदेश व मन्तव्य हैं।

'वेदों की ओर चलो' का बिगुल बजाया

भारत की भाषा, धर्म, संस्कृति, साहित्य, इतिहास, देश-भक्ति आदि को समाप्त करने की दृष्टि से बनाई लार्ड मैकाले की शिक्षा-योजना को विफल कर देश के छात्र-छात्राओं में अपनी भाषा, धर्म, संस्कृति आदि के प्रति अगाध श्रद्धा व स्वाभिमान भरने के लिए महर्षि की योजनानुसार आर्य

स्वामी दयानंद जी ने सर्वप्रथम घोषणा की थी कि भारत भारतीयों के लिए है।
– एनी बेसेंट

महर्षि दयानन्द स्वाधीनता संग्राम के सर्वप्रथम योद्धा, हिन्दू जाति के रक्षक थे।
– स्वातंत्र्य वीर सावरकर

हमारे देश ने बहुत-से महान पुरुषों और सुधारकों को जन्म दिया, इनमें महर्षि दयानंद एक हैं। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन समाज में फैले अंधविश्वास को और विशेष रूप से ऊँच-नीच के भेदभाव को मिटाने में लगाया। जिस प्रकार महर्षि दयानंद ने यह उपदेश दिया कि प्राचीन ग्रंथों का फिर से अध्ययन किया जाये, उसी प्रकार यह आवश्यक है कि हम उनके उपदेशों को फिर से सही संदर्भ में रखकर देखें।
– इन्दिरा गांधी, पूर्व प्रधानमंत्री

ऐसे समय में जब हमारी परम्पराएँ और आध्यात्मिकता लुप्त हो रही थीं, तब स्वामी दयानंद ने 'वेदों की ओर लौटने' का आह्वान किया। महर्षि दयानंद केवल वैदिक ;षि ही नहीं, बल्कि राष्ट्र ;षि भी थे।
– नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

समाज ने उत्तर भारत के लगभग सभी प्रान्तों में गुरुकुलों, विद्यालयों, महाविद्यालयों की स्थापना की। प्रमाण-स्वरूप जब राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी दक्षिण अफ्रीका में वहां की गोरी सरकार की रंग-भेद नीति के विरुद्ध सत्याग्रह कर रहे थे तो गुरुकुल कांगड़ी के विद्यार्थियों ने अपने नित्य का घी-दूध त्याग कर और दूधिया बांध पर मजदूरी करके धन जमा किया और गांधी जी की सहायतार्थ भेजा। यही कारण था कि भारत आने पर गांधी जी सर्वप्रथम गुरुकुल कांगड़ी में उन देशभक्त बच्चों को आशीर्वाद देने गये।

प्रतिबंध और कट्टरपंथियों के हमले

कई स्थानों विशेषकर मस्जिदों के सामने आर्य समाज के नगर-कीर्तनों पर ब्रिटिश सरकार ने पाबंदी लगाई हुई थी। साल 1926 में मुरादाबाद और 1930 में पानीपत में इस प्रकार की अन्यायपूर्ण पाबंदियां थोपी गई थीं। 22 नवंबर, 1930 को सहारनपुर के बहादुराबाद में आर्य समाज मंदिर में एक ब्रिटिश अफसर ने जूते पहने कुछ सिपाहियों के साथ जबरदस्ती घुसकर वेदी का अपमान किया और ध्वज को फाड़ डाला। ब्रिटिश कालखंड में राजनीतिक और धार्मिक आंदोलनों में जेल गए आर्य सत्याग्रहियों के लिए कारावास में हवन पर प्रतिबंध लगाया हुआ था। 23 दिसंबर, 1926 को स्वामी श्रद्धानंद की दिन के चार बजे दिल्ली में अब्दुल रशीद नाम के एक उन्मादी ने हत्या कर दी। 1927-1942 के बीच मुस्लिम षड्यंत्रों के चलते लाहौर में माननीय राजपाल की हत्या और उसके बाद लाहौर में दो अन्य आर्य बंधुओं की हत्या, 1934 में बहराइच के साहू बद्री शाह की हत्या, कराची के आर्य नेता पंडित नाथूराम की हत्या मुस्लिम कट्टरपंथियों ने की। अतः आत्मरक्षा के लिए आर्य वीर दल और आर्य रक्षा समिति का गठन किया गया। हिसार जिले की लौहरु रियासत का शासक एक मुस्लिम था जबकि जनता अधिकांश हिन्दू। साल 1936 और 1940 में दो बार मुस्लिम कट्टरपंथियों ने आर्य समाज के नगर-कीर्तनों पर हमला किया। सिंध की मुस्लिम लीग सरकार ने 26 अक्टूबर, 1944 को 'सत्यार्थ प्रकाश' के प्रकाशन पर प्रतिबंध लगा दिया।

सामाजिक सुधार

स्वामी दयानंद के समय समाज आडम्बरों और विकृतियों से घिरा हुआ था। एक तरफ ब्रिटिश काल की पराधीनता से संघर्ष चल रहा था, तो दूसरी ओर समाज को व्यापक सुधार की आवश्यकता थी। स्वामी जी ने सामाजिक रूढ़ियों और कुरीतियों का विरोध किया एवं समाज को प्रगति के पथ पर अग्रसर किया।

वैदिक और बौद्धकाल तक भारतीय महिलाओं में पर्दे की प्रथा का उल्लेख नहीं मिलता। मुगलकाल में पर्दे की प्रथा का चलन हुआ जिसके परिणामस्वरूप महिलायें धीरे-धीरे घर की चारदिवारी में सीमित हो गई। स्वामी जी ने इस समस्या की ओर ध्यान दिया। इसके लिए उन्होंने सार्वजनिक कार्यक्रम एवं समारोहों में महिलाओं की भागीदारी पर बल दिया। स्वामी जी के प्रयत्नों से धीरे-धीरे पर्दे की प्रथा से भी स्त्रियों को मुक्ति मिलने लगी। 'पर्दा प्रथा' की भाँति ही सती प्रथा के

विश्वव्यापी संगठन

आज आर्य समाज भारत ही नहीं, बल्कि विश्व के अन्य भागों में भी पर्याप्त रूप से सक्रिय है। संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, त्रिनिदाद, मेक्सिको, यूनाइटेड किंगडम, नीदरलैंड, केन्या, तंजानिया, युगांडा, दक्षिण अफ्रीका, मलावी, मॉरीशस, पाकिस्तान, बर्मा, थाईलैंड, सिंगापुर, हांगकांग और ऑस्ट्रेलिया कुछ ऐसे देश हैं जहां आर्य समाज की शाखाएं हैं।

विरुद्ध भी स्वामी दयानंद सरस्वती ने आवाज उठाई। उन्होंने विधवा महिलाओं के जीवन मे प्रकाश की ज्योति जलाई। इसके लिए उन्होंने पुनर्विवाह की व्यवस्था की जिससे विधवा महिलाओं को नवजीवन मिला।

स्वामी दयानंद सरस्वती ने 'बाल विवाह' के विरुद्ध भी अभियान चलाया, जिससे समाज को इस कुरीति से मुक्ति मिल सके। सेन्ट्रल असेम्बली में राजस्थान के प्रसिद्ध आर्य समाजी नेता दीवान बहादुर हरविलास जी शारदा ने तो इसके लिए कानून भी बनवाया था। स्वामी दयानंद का मानना था- ''बाल्यावस्था में विवाह से जितनी हानि पुरुष की होती है उससे अधिक महिला की होती है। जैसे कच्चे खेत को काट लेने से अन्न नष्ट हो जाता है, ठीक उसी तरह छोटी आयु में जो अपनी संतानों का विवाह कर देते हैं उनका वंश बिगड़ जाता है।''

स्वामी दयानंद सरस्वती ने 'बहुविवाह' का भी विरोध किया और एक विवाह के आदर्श सिद्धांत का प्रतिपादन किया।

गोरक्षा सत्याग्रह

महर्षि दयानन्द ने धार्मिक और आर्थिक दृष्टि से गोरक्षा पर बड़ा बल दिया है। अपने जीवन काल में उन्होंने तत्कालीन वायसराय और कमाण डर-इन-चीफ से मिलकर गोवध रोकने की विशेष मांग की थी। "गोकरुण ानिधि' ' पुस्तक लिखकर महर्षि ने अपने इस कार्यक्रम के विषय की व्याख्या और पुष्टि की है। आर्य समाज के विशाल कार्यक्रम में गोरक्षा का विशेष स्थान है।

दीपावली के अवसर पर जोधपुर के महाराजा जसवंत सिंह द्वितीय ने महर्षि दयानंद को अपने महल में आमंत्रित किया और गुरु का आशीर्वाद मांगा। उन्होंने राजा को दरबार की नृत्यांगना का परित्याग करने और धर्म के जीवन पाठ पर आगे बढ़ने की सलाह दी। इससे नृत्यांगना उन पर क्रुद्ध हो गयी। उसने रसोइए के साथ महर्षि के दूध में कांच के टुकड़े मिलाने का षड्यंत्र रचा जिससे कष्टदायी पीड़ा के उनकी मृत्यु हो गई।

स्त्री शिक्षा पर बल

स्वामी दयानंद सरस्वती महिलाओं को शिक्षित करने के प्रबल पक्षधर थे। वैदिक काल में स्त्रियों का स्थान बहुत सम्मानजनक था और उन्हें भी शिक्षा का पूर्ण अधिकार था। हिन्दू धर्म में कोई भी यज्ञ स्त्रियों के बिना पूर्ण नहीं माना जाता था। हमारे प्राचीन धर्म ग्रंथों में देवताओं के साथ-साथ देवियों का भी उल्लेख मिलता है, जिन्होंने समय-समय पर अपने ज्ञान और शक्ति का परिचय दिया है। बाद में स्त्रियों को बाहर जाने एवं पढ़ने की अनुमति नहीं दी गई, जिससे स्त्रियों की स्थिति बदल गई। स्वामी जी ने स्त्रियों को शिक्षा के समान अवसर देने की बात कही। वे स्त्रियों को पुरुषों की भांति सक्षम बनाने के पक्षधर थे। स्वामी दयानंद का मानना है कि वेदाभ्यास एवं शिक्षा द्वारा ही स्त्रियाँ गार्गी और मैत्रेयी जैसी विदुषियां बन समाज को प्रगति के पथ पर ले जा सकती हैं।

'शुद्धि आंदोलन' और 'घर वापसी'

इस्लाम और ईसाइयत में मतांतरित हिंदुओं का अपने मूल धर्म और समाज में वापस आने की प्रक्रिया 'घर वापसी' के नाम से जानी जाती है। इसी प्रक्रिया को शुद्धि भी कहा जाता है। भारत में रहने वाले अधिकांश मुस्लिमों और ईसाइयों के पूर्वज हिन्दू ही थे। किसी समय भय या धोखे से उन्हें मतांतरित किया गया था। स्वामी दयानंद सरस्वती ने समाज के इस वर्ग की घर वापसी का कदम उठाया और इसके लिए उन्होंने 'शुद्धि आंदोलन' चलाया। शुद्धि आंदोलन से समाज को एकजुट करने में व्यापक बल मिला।

ईसाइयों के षड्यंत्र का मुकाबला

ब्रिटिश काल में ईसाइयों का घातक अराष्ट्रीय प्रचार प्रछन्न रूप में था, पर स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात कांग्रेस सरकार की तथाकथित धर्मनिरपेक्ष नीति का अनुचित लाभ उठाते हुए ईसाई पादरियों ने भारत को 'ईसाई-स्थान' बनाने का स्वप्न लेना शुरू कर दिया।

यूरोप और अमेरिका के साम्राज्यवादी राष्ट्रों ने उन्मुक्त हाथों से इन ईसाई मिशनों की सहायता करनी प्रारम्भ की। इन मिशनों ने भारत के उत्तर-पूर्व प्रदेश, असम, नागालैण्ड, मणिपुर, त्रिपुरा और मध्य प्रदेश के भीलों, छोटा नागपुर, उड़ीसा, बिहार व राजस्थान की जन-जातियों तथा अन्य प्रदेशों के पिछड़े वर्गों को सामूहिक रूप से विधर्मी बनाने पर अपनी शक्ति केन्द्रित करनी प्रारम्भ कर दी। देश में केवल आर्य समाज ही ऐसी संस्था थी जिसने ईसाइयों की इस चुनौती का मुकाबला करने का निश्चय किया।

ईसाइयों की अराष्ट्रीय गतिविधियों को रोकने और जनमत को जागृत करने के लिए सभा ने बड़े पैमाने पर कार्य प्रारम्भ किया। आर्य नेताओं ने प्रभावित क्षेत्रों का दौरा किया, ईसाइयों के कुचक्र से देश को सावधान करने के लिए विभिन्न भाषाओं में पर्चे बांटे गए। इसके अतिरिक्त सभा ने निम्न चतु: सूत्री कार्यक्रम निश्चित किया था :-(1) प्रत्येक ग्राम और नगर में आर्य हिन्दुओं की ऐसी समितियां बनाई जाएं जो ईसाइयों की अवांछनीय प्रवृत्तियों पर दृष्टि रखे और उनके निराकरण का उपाय करें, (2) समूचे देश में उत्तम प्रचारकों का जाल बिछा दिया जाय और ईसाई प्रचार निरोध का संदेश प्रत्येक भारतीय तक पहुंचाया जाय, (3) हिन्दू धर्म के प्रति ईसाइयों के अनर्गल प्रचार का निराकरण और साथ-साथ अस्पृश्यता का निवारण किया जाए, (4) आदिवासी कही जाने वाली जातियों, अरण्यवासी पिछड़ी जातियों में समाज-सुधार, शिक्षा प्रसार, सेवा सहायता के कार्य बड़े पैमाने पर प्रारम्भ किये जाएं और निर्धन बालकों की शिक्षा के लिये मुफ्त पुस्तकें, फीस की छूट, छात्रवृत्ति इत्यादि के रूप में विशेष सहायता दी जाए। स्कूल, अस्पताल, अनाथालय, वनिता आश्रम आदि की व्यवस्था की जाए।

मूलशंकर बने दयानंद

स्वामी दयानंद का जन्म 12 फरवरी, 1824 को गुजरात के टंकारा में हुआ था। इनके बचपन का नाम मूलशंकर था। परिवार सम्पन्न एवं प्रभावशाली था और पिता के मार्गदर्शन में मूलशंकर ने नीतिशास्त्र, साहित्य एवं व्याकरण का अध्ययन किया। उन्होंने 14 वर्ष की आयु में ही सम्पूर्ण यजुर्वेद संहिता को कंठस्थ कर लिया था। बचपन में ही मूलशंकर की बहन और चाचा का निधन हो गया, जिसके चलते उनका मन गहरे संताप में डूब गया। इसके उपरांत, जीवन और मृत्यु के जटिल प्रश्नों को समझने के लिए उनके मन में जिज्ञासा उत्पन्न होने लगी। साथ ही, उन्हें सांसारिक कार्यों से भी विरक्ति होने लगी। उनकी इस मन:स्थिति को देखकर पिता चिंतित रहने लगे और उन्होंने सोचा कि क्यों न मूलशंकर का विवाह कर दिया जाए, जिससे वह सांसारिक कार्यों में पुन: रुचि लेने लगेंगे। मगर मूलशंकर इन सब में बंधने को तैयार नहीं थे। अत: उनके पिता द्वारा निश्चित की गई विवाह की तिथि से कुछ दिन पूर्व ही वह घर त्यागकर ज्ञान की खोज में निकल पड़े और साधु बन गये। वास्तविक ज्ञान प्राप्त करने के लिए वे गुरु की खोज करने लगे, स्वामी विरजानंद के सान्निध्य में पहुंचे। जहां उन्हें अनुभव हुआ कि जिस गुरु की वे खोज कर रहे हैं, वह उन्हें मिल गये हैं। यहाँ उन्हे नया नाम-दयानंद सरस्वती दिया गया।

स्वामी जी का निधन

30 अक्टूबर, 1883 को दीपावली के अवसर पर जोधपुर के महाराजा जसवंत सिंह द्वितीय ने महर्षि दयानंद को अपने महल में आमंत्रित किया और गुरु का आशीर्वाद मांगा। उन्होंने राजा को दरबार की नृत्यांगना का परित्याग करने और धर्म के जीवन पाठ पर आगे बढ़ने की सलाह दी। इससे नृत्यांगना उन पर क्रुद्ध हो गयी। उसने रसोइए के साथ महर्षि के दूध में कांच के टुकड़े मिलाने का षड्यंत्र रचा जिससे कष्टदायी पीड़ा के उनकी मृत्यु हो गई। हालांकि, उन्होंने दीपावली के दिन अजमेर में अपनी मृत्यु होने से पूर्व इस षड्यंत्र में सम्मिलित रसोइए को क्षमा कर दिया। ❐

सेवा की श्रेष्ठता

अपेक्षारहित अथवा निस्वार्थ सेवा भी ईश्वर की आराधना का ही एक रूप है। यदि जीवन में सेवा का सौभाग्य मिलता हो तो सेवा सभी की करना लेकिन आशा किसी से भी मत रखना क्योंकि सेवा का वास्तविक मूल्य भगवान दे सकते हैं, इंसान नहीं। जगत से अपेक्षा रखकर कोई सेवा की गई है तो वो एक न एक दिन निराशा का कारण अवश्य बनेगी। सेवा पुण्य कमाने का साधन है, प्रसिद्धि कमाने का नहीं। प्रभु जी ने अगर आपको सेवा के लिए चुना है तो आपकी असली एफ.डी. बन रही है।

–डॉ. संजय जिंदल

लक्ष्य प्राप्ति के लिए दिशा हो सही

■ अनिल

भगवान राम कहते हैं– 'पितां दीन्ह मोहि कानन राजू। जहन सब भांति मोर बड़ काजू।।' अर्थात् वनवास उनके लिए दंड नहीं, बल्कि पिता की आज्ञा का पालन करने का एक श्रेष्ठ अवसर है। वे इसे अपने धर्म और कर्तव्य के रूप में स्वीकार करते हैं।

यह हम सब जानते हैं कि जंगल का जीवन आसान नहीं है। यह चुनौतियों भरा होता है, अपार कठिनाइयाँ सामने होती हैं, फिर भी प्रभु श्रीराम ने इस अवसर की पूर्णरूपेण मर्यादा रखते हुए, संसाधन-विहीन होते हुए भी भालू, बानर, कोल-किरातों को एकत्र कर राक्षस राज रावण का अंत किया। उसी प्रकार हमें भी अवसर को हाथ से नहीं जाने देना चाहिए।

हम सभी की जीवन दिनचर्या भी अपने-अपने ढंग की है। आज का काम कल पर टालना या जो जैसा हो रहा है, उसी के अनुरूप चलने देने में ही भलाई है, बस यही सोचते रहते, उससे आगे कुछ न विचारते न ही प्रयास करते हैं। फलत: कार्य का परिणाम अपेक्षाकृत नहीं होता, हमें लगता है; अरे! हम तो इतना परिश्रम कर रहें हैं और फल नगण्य!

यह विचार करना होगा कि हम किसी अन्य के लिए नहीं, वरन् स्वयं अपने लिए लक्ष्य सिद्ध कर रहे हैं। कैसे करें, ये मार्गदर्शन प्राप्त कर, चुनौतियों को स्वीकारें, छोटे-छोटे लक्ष्य निर्धारित कर समयबद्ध योजना बना कर सतत् प्रयास करने से सुखद परिणाम भी मिलेगा और आनंद की अनुभूति प्राप्त होगी।

तो फिर परिश्रम क्यों करें? यदि परिश्रम करना है तो क्यों, उद्देश्य स्पष्ट होना चाहिए। उद्देश्य स्पष्ट हो तो मार्ग और दिशा दोनों तय हो। अभी क्या है कि हम अपने कार्य क्षेत्र में जहाँ पहले से कार्य हो रखा है या चल रहा है वहाँ पर ही अपनी ऊर्जा व्यर्थ कर अपनी पीठ स्वयं थपथपा लेते हैं। यह विचार करना होगा कि हम किसी अन्य के लिए नहीं, वरन् स्वयं अपने लिए लक्ष्य सिद्ध कर रहे हैं। कैसे करें, ये मार्गदर्शन प्राप्त कर, चुनौतियों को स्वीकारें, छोटे-छोटे लक्ष्य निर्धारित कर समयबद्ध योजना बना कर सतत् प्रयास करने से सुखद परिणाम भी मिलेगा और आनंद की अनुभूति प्राप्त होगी।

चल पड़े पैर जिस ओर पथिक,
उस पथ से फिर डरना कैसा।
लक्ष्य प्राप्ति गर निश्चित मन में,
फिर रुक-रुक कर बढ़ना कैसा।।

(लेखक सेवा भारती पश्चिमी विभाग में मंत्री हैं) ❒

प्यारी गो माता

■ सुदीप गर्ग

प्यारी गो माता हमारी है,
हमें प्राणों से प्यारी है।
गाय की रक्षा करना सबकी,
ये जिम्मेदारी है।।

कृष्ण का राज रहा था जब,
होती थी गाय की सेवा तब,
कृष्ण के वंशज जागो अब,
नहीं तो फिर जागोगे कब,
आज गाय की गर्दन पर,
चलती कटारी है।
प्यारी गो माता.....

गाय में कुछ बातें हैं खास,
है इसमें सब देवों का वास,
ये गो धन है जिसके भी पास,
कभी वो रहता नहीं उदास,
इसी गाय की ;षि मुनियों ने,
आरती उतारी है।
प्यारी गो माता.....

गाय का दूध अमृत की धार,
दूध से रोगों का उपचार,
गाय के घी में बल है अपार,
गाय से सुखी देश संसार,
गोबर और मूत्र भी गाय का,
बड़ा गुणकारी है।
प्यारी गो माता.....

फिर भी दिल में है कुछ ग़म,
गाय का दर्जा हो गया कम,
कूड़े के ढेर पर देखते हम,
देख कर आती हमें शर्म,
आज गाय सड़कों पर फिरती,
मारी मारी है।
प्यारी गो माता.....

गौशालाओं का हो निर्माण,
बनेगा भारत तभी महान,
गाय से भारत की पहचान,
गाय से खुश होते भगवान,
वेदों ने बतलाई गाय की,
महिमा भारी है।
प्यारी गो माता.....

अब सब को समझना है,
गोवध बंद करवाना है,
गोमंत्रालय बनवाना है,
गाय का मान बढ़वाना है,
राष्ट्र की माता गाय बने,
ये मांग हमारी है।

प्यारी गो माता हमारी है,
हमें प्राणों से प्यारी है।
गाय की रक्षा करना सबकी,
ये जिम्मेदारी है।। ❐

हिंदुत्व एक जीवन-शैली

■ स्वाति पाठक 'स्वाति'

सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश न्यायमूर्ति जे.एस. वर्मा ने नारायण राणे के मामले में 11 दिसंबर, 1995 को कहा था, 'hindutva is way of life' यानी हिंदू कोई मत नहीं, अपितु एक जीवन-शैली है। माननीय न्यायालय के इस आदेश के अनुसार यह निश्चित तौर पर कहा जा सकता है कि वास्तव में हिंदू वे सभी लोग हैं जो भारत भूखंड में रहते हैं, भारतीय संस्कृति के पालक हैं। चाहे किसी की कोई भी जाति हो, कोई भी मत-पंथ हो लेकिन वह भारत में रहता है तो वह हिंदू है।

इस बात को सरल शब्दों में कहा जा सकता है कि वह हर व्यक्ति जो इस धरती पर जन्म लेता है, भारत के संसाधनों का उपयोग करता है और भारतीय संस्कृति का पोषक है वह हिंदू है। वास्तव में यह सांस्कृतिक विरासत है। (भले ही वह व्यक्ति तिलक न लगाता हो, मंदिर न जाता हो और बाहरी हिंदू संस्कृति के चिह्न धारण न करता हो फिर भी वह हिंदू है।)

आज संसार के हर कोने में हिंदुओं की जीवन-शैली, हिंदुओं के शास्त्र, हिंदुओं के तीज-त्योहार तथा भारत की बौद्धिक कुशलता सम्मान पा रहे हैं। इसीलिए वे लोग भारत के प्रति आकर्षित हो रहे हैं। इसके उदाहरण हैं हमारी इसरो द्वारा सैटेलाइट का सफल परीक्षण, वैश्विक स्तर पर फैला हुआ योग, पैसे के लेनदेन में वैश्विक स्तर पर यूपीआई का प्रयोग।

इसलिए कहा जा सकता है कि हिंदू भारतीय परंपरा का पालक होता है। किसी अन्य धर्म से तुलना या नकारात्मक भाव उसके अंदर नहीं होता। ;षि-मुनियों द्वारा प्रणीत शैली का अपने जीवन में अवलंबन करता है। हिंदू प्रकृति पूजक होता है- जैसे तुलसी की पूजा, पीपल की पूजा, बड़ की पूजा आदि इसके प्रमुख उदाहरण हैं। हिंदू पशु-पक्षियों का भी मान सम्मान, आदर करता है। जैसे घर की पहली रोटी गाय के लिए होती है और आखिरी रोटी कुत्ते के लिए होती है। गोवर्धन, गोपाष्टमी पर गाय की पूजा की जाती है।

हिंदू देवों का और अपने पितरों का आभार व्यक्त करता है। जैसे प्रातः उठकर ही "कराग्रे वसते लक्ष्मी..." और "समुद्र वसने देवी..." आदि के द्वारा देवों का आभार व्यक्त करता है।

इस विश्व की अनुपम बात है कि हिंदू ही अपनी सद्भावना के द्वारा सकल लोक-मंगल कामना की प्रार्थना करता है। पूजा करने के बाद धर्म की जय हो, अधर्म का नाश हो, प्राणियों में सद्भावना हो इस तरह के उद्घोष किए जाते हैं। हिंदू केवल अपने ही कल्याण की भावना नहीं रखता, अपितु समस्त विश्व के कल्याण के लिए वह प्रार्थना करता है और कहता है कि - सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे संतु निरामयाः।

सर्वे भद्राणि पश्यंतु मा कश्चित दु:ख भाग्भवेत्।।

स्वामी विवेकानंद का उदाहरण

शिकागो के धर्म सम्मेलन में किसी ने स्वामी जी से पूछा कि "भारत में तो सभी धर्म अलग-अलग हैं तो फिर इनका सामंजस्य कैसे हो पाता है?" स्वामी जी ने एक उदाहरण देते हुए कहा, "जिस तरह पहिए में अनेक तिल्लियाँ होती हैं लेकिन सब अलग-अलग तिल्लियों के बीच में एक केंद्र यानी धुरी होती है जो सबको जोड़ती है। इसी तरह ही भले ही सबके मत-मतांतर, धर्म, मजहब अलग-अलग हैं लेकिन सभी हिंदुत्व की धुरी से जुड़े हुए हैं।"

भारत में ऐसे अनेक संत, मनीषी, ज्ञानी, महापुरुष हुए हैं जिन्होंने सनातन की रक्षा के लिए बहुत कार्य किए हैं। उनमें राजमाता अहिल्याबाई होलकर, आदि जगद्गुरु शंकराचार्य, गौतम बुद्ध, गुरु नानक देव, भगवान महावीर स्वामी, स्वामी दयानंद सरस्वती, संत तिरुवल्लुवर, संत कबीर आदि का योगदान प्रमुख रूप से माना जाता है। वर्तमान में भी राष्ट्रीय स्तर पर अनेक गतिविधियों में समाज के सभी वर्गों का सहयोग रहता है। इसमें प्रमुख रूप से राम मंदिर निर्माण में सर्व समाज का उल्लेखनीय सहयोग रहा है।

हिंदू कभी भी ऊँच-नीच का भेदभाव, जाति-पाति के भेदभाव में विश्वास नहीं करता। समरसता का सहारा लेकर ही

सारे व्यवहार करता है। फुले दंपति ने इस क्षेत्र में बहुत कार्य किया है। समरसता के सबसे बड़े उदाहरण के रूप में कुंभ के मेले को लिया जा सकता है। एक ही घाट पर सभी लोगों के द्वारा बिना किसी भेदभाव के स्नान करना समरसता का सबसे बड़ा उदाहरण है। गत वर्ष 2025 में कुंभ के मेले में 65 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं का स्नान किसी एक विशेष जाति, धर्म अथवा संप्रदाय का नहीं अपितु सभी हिंदुओं का रहा है। वास्तव में यह उदाहरण 'मैं' से 'हम' की यात्रा का है। इतना ही नहीं यह योगदान देश को परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्त करने के लिए स्वतंत्रता आंदोलन में भी सभी का पूरा योगदान रहा है।

सनातन की रक्षा के लिए पहले हर परिवार का बड़ा बेटा राष्ट्र तथा हिंदू धर्म की रक्षा के लिए सिख परंपरा में गुरुओं को भेंट किया जाता था।

हिंदू जीवन-शैली

1. प्रकृति प्रेमी : हिंदू जीवन-शैली शास्त्रीय मर्यादा से भरी हुई होती है। इसीलिए प्रातःकाल उठते ही दोनों हाथों को देखकर "कराग्रे वसने देवी....'' आदि मंत्र पढ़ा जाता है। शैया त्यागने से पूर्व धरती माता का आभार व्यक्त करते हुए "समुद्र वसने देवी.....'' आदि का पाठ किया जाता है। वास्तव में यह इस बात को स्पष्ट करता है कि हिंदू प्रकृति के प्रेमी होते हैं, वे प्रकृति का दोहन नहीं करते, शोषण नहीं करते अपितु आभार व्यक्त करते हैं।

2. कुटुंब का भाव : हिंदू परिवारों में कुटुंब-संबंधों का प्रभाव रहता है। इसीलिए अपने हर संबंध के लिए चाचा-चाचा, नाना-नानी, ताऊ ताई आदि का संबोधन किया जाता है।

3. नारी सम्मान : हिंदुओं के ग्रंथों में सभी जगह "यत्र नार्यस्तु पूज्यंते....'' के द्वारा नारी सम्मान की बात कही गई है। इतना ही नहीं, सभी देवी-देवताओं के नाम के पूर्व में भी देवियों के नाम को स्मरण किया जाता है। जैसे- राधा-कृष्ण, सीता-राम आदि। इसी भाव के कारण अर्धनारीश्वर की कल्पना भारत में पैदा हुई है।

4. ईश्वर अंश : हिंदुओं के सभी शास्त्रों में कण-कण में ईश्वर को विराजमान माना जाता है। इसीलिए उपनिषद में कहा गया है कि "ईशावास्यमिदं सर्वम्...." अर्थात हर जगह परमात्मा का निवास है। जितना परमात्मा का निवास मनुष्य में है उतना ही पशु-पक्षी, कीट-पतंगों आदि में होता है अर्थात परमात्मा का निवास कण-कण में होता है।

5. बड़ों को सम्मान देना : हिंदुओं की जीवन पद्धति में अपने से बड़ों को सम्मान देना, अभिवादन करना, चरण स्पर्श करना, वंदन करना और सम्मान भरे शब्दों का प्रयोग करना ग्राह्य माना गया है। इसीलिए घर में तथा समाज के वृद्ध लोगों का चरण स्पर्श किया जाता है और उनसे मिलने पर राम-राम भी किया जाता है। संस्कृत में लिखा है कि "अभिवादन शीलस्य...." अर्थात जो व्यक्ति अपने से बड़ों का अभिवादन करता है और उनकी सेवा करता है तो उनकी चार चीजें बढ़ती हैं-आयु, विद्या, यश और बल।

हिंदू जीवन का स्वरूप

1. हिंदू जीवन समावेशी है। हिंदू जीवन का भाव सभी को अपनाने का है, अपने समान मानने का है और साथ में लेकर चलने का है। इसीलिए- पूजा के स्थान सभी के लिए खुले रहें। जल के स्थान सभी के लिए समान हों। विभिन्न आयोजन अलग-अलग न होकर एक ही हों। जैसे- होली, जन्माष्टमी, दुर्गा पूजा, बुद्ध पूर्णिमा, गुरु रविदास जयंती और वाल्मीकि जयंती आदि।

हिंदुओं के जीवन में वी.ए.आर. इन तीन चीजों का पालन ज्यादा हितकर माना जाता है। जैसे-

1. वी. यानी (विजिबिलिटी)। इसके अंतर्गत हिंदू घरों की पहचान के लिए घरों के बाहर तुलसी का बिरवा, विभिन्न रंगों की वंदनवार, पताका, रंगोली आदि होनी चाहिए।

2. ए. यानी एक्सिबिलिटी। इसके अंतर्गत समाज-हित में उन सभी बातों को जोड़ना जो परस्पर भाईचारा बढ़ाती हैं।

3. आर. यानी रिजेक्टिबिलिटी। इसके अंतर्गत उन सभी व्यवहारों को, बातों को, पुरानी मान्यताओं को अस्वीकार करना जो परस्पर घृणा पैदा करते हों। वर्तमान में युवाओं को भ्रमित करने वाले "जेन जी' के सही रूप को समझाना, जिससे वे भ्रमित न हो जाएँ।

विश्व पटल पर हिंदुत्व

आज संसार के हर कोने में हिंदुओं की जीवन-शैली, हिंदुओं के शास्त्र, हिंदुओं के तीज-त्योहार तथा भारत की बौद्धिक कुशलता सम्मान पा रहे हैं। इसीलिए वे लोग भारत के प्रति आकर्षित हो रहे हैं। इसके उदाहरण हैं हमारी इसरो द्वारा सैटेलाइट का सफल परीक्षण, वैश्विक स्तर पर फैला हुआ योग, पैसे के लेनदेन में वैश्विक स्तर पर यूपीआई का प्रयोग। ❐

फूल

■ संगीता

पहली सांस थी।
फिर बातें सुनी,
बातें सुनकर कहने की कोशिश की कई।
पहले जगमगाते रंगों को देखा नहीं,
पर परिवेश का एक एहसास था।

अंकुर फूटा, कली बना
कली को एक दिन फूलों-सा खिल जाना था।
पर फूल क्या जाने
उसे एक दिन मुरझाना था।

वह मासूम फूल
दिल की बातें दिल में न रख पाता था।
जग के सामने रोता, हँसता, गाता था,
पर उसकी बातें अनसुनी।

जब अपनी खुशी गाता,
"अच्छा है"7 कहकर सब कोई उससे दूर हो जाता।
जब अपने ख्वाब बताता, रोष जताता,
तो मज़ाक बन जाता।

उसके हर आँसू की वजह है वही
लोगों के संग उसका दिल भी
उसे ये बताता।

लोग कहते हैं-
"तुम आज माली के हो, कल मालिक के।
ना तुम इसके हो, ना तुम उसके,
तुम तो खुद के भी नहीं।"
कहते हैं-
"तुम एक जगह क्यों खड़े हो?
क्यों आगे बढ़ते नहीं,
क्यों कुछ करते नहीं?"

आगे तो मैं भी बढ़ना चाहता हूँ।
हिम्मत जुटा,
खुद को अपनी जड़ों से छुड़ा,
बगिया से एक कदम बाहर आता हूँ।
पर न जाने क्यों
मैं फिर खुद को बगिया में पाता हूँ।
लोग कहते हैं-
"बगिया से दूर कैसे जी पाओगे?
अपनी जड़ें छोड़ कहाँ जाओगे?"

खूबसूरती से खिलता हूँ
तो लोग तोड़ना चाहते हैं।
पर मुरझाता हूँ
तो लोग छोड़ना चाहते हैं।

कहता हूँ
तो अक्सर अनसुना रह जाता हूँ।
शुरुआत लोगों के सुनने से की थी
अभी भी लोगों की बातें सुनता जाता हूँ।

सुनकर बोलने की कोशिश करता हूँ,
पर बोल नहीं पाता।
पहले जगमगाते रंग दिखते थे नहीं,
अब देख नहीं पाता।

हाँ, परिवेश का एहसास
तो था तब भी और अब भी।
पहले उल्लास था,
पर अब बस है नमी।।

- कक्षा-12वीं वाणिज्य,
स्प्रिंग मिडोज पब्लिक स्कूल

साहस, धैर्य और दूरदर्शिता के प्रतीक

■ कमलेश त्रिपाठी

छत्रपति शिवाजी महाराज का जन्म 19 फरवरी, 1630 को शिवनेरी किला, महाराष्ट्र में हुआ था। उनके पिता का नाम शहा जी भोसले और माता का नाम जीजाबाई था। बाल्यकाल से ही शिवाजी में साहस, नेतृत्व और रणनीति की अदभुत क्षमता दिखाई दी। जीजाबाई ने उन्हें भारतीय इतिहास, धार्मिक मूल्यों और मराठा समाज के प्रति जिम्मेदारी का पाठ पढ़ाया। छोटे से ही शिवाजी ने किले और रणनीतियों के महत्व को समझा। वे अपने समय के अत्यंत कुशल योद्धा और दूरदर्शी नेता बनकर उभरे। उनके अंदर धैर्य, साहस, न्यायप्रियता और स्वाभिमन के गुण प्रखर रूप से थे।

वीरता और संघर्ष

शिवाजी महाराज ने मराठा साम्राज्य की स्थापना कर अनेक मुस्लिम सुल्तानों और मुगलों के खिलाफ लड़ाई लड़ी। उनके जीवन की कई घटनाएं भारतीय इतिहास में अमर हैं।

किले और सामरिक रणनीति

शिवाजी महाराज ने अपने समय में लगभग 300 किलों का निर्माण और नियंत्रण किया। इनमें से प्रमुख थे राजगढ़किला, प्रतापगढ़ किला, सिंहगढ़ किला और शिवनेरी किला। उन्होंने किलों के निर्माण और संरक्षण के माध्यम से दुश्मनों के खिलाफ मजबूत सुरक्षा दी।

> शिवाजी महाराज ने अपने समय में लगभग 300 किलों का निर्माण और नियंत्रण किया। इनमें से प्रमुख थे राजगढ़किला, प्रतापगढ़ किला, सिंहगढ़ किला और शिवनेरी किला। उन्होंने किलों के निर्माण और संरक्षण के माध्यम से दुश्मनों के खिलाफ मजबूत सुरक्षा दी।

सागर और घेराबन्दी

शिवाजी महाराज ने जल सेना की स्थापना की, जो उस समय के लिए एक अनोखा विचार था। उनके पास समुद्री ताकत थी, जिसने पश्चिमी तट पर व्यापार और सैन्य नियंत्रण बनाए रखने में मदद की।

संग्राम और युद्धनीति

शिवाजी महाराज की युद्धनीति बहुत ही प्रभावशाली थी। उन्होंने गोरिल्ला युद्ध और रात में छापेमारी

जैसी रणनीतियों का उपयोग करके दुश्मनों को हराया। उनके पास अद्भुत साहस, धैर्य और दूरदर्शिता थी।

प्रशासनिक दृष्टिकोण

शिवाजी महाराज केवल एक वीर योद्धा नहीं थे, बल्कि एक कुशल प्रशासक और दूरदर्शी नेता भी थे। उन्होंने अपने साम्राज्य में कई प्रशासनिक सुधार किए।

सुदृढ़ प्रशासनिक व्यवस्था

उन्होंने अस्सी की संख्या में मंत्रालय बनाए और अलग-अलग विभागों को नियंत्रित करने के लिए जिम्मेदार अधिकारी नियुक्त किए। यह प्रशासनिक दृष्टिकोण उन्हें एक आदर्श राजा बनाता है।

समानता और न्याय

शिवाजी महाराज ने समाज में जाति, धर्म या वर्ग के आधार पर भेदभाव नहीं होने दिया। उन्होंने अपने प्रशासन में कानून और न्याय को सर्वोपरि रखा।

कृषि और समाज कल्याण

उन्होंने किसानों और सामान्य जनता के हितों का ध्यान रखा। टैक्स व्यवस्था को न्यायसंगत बनाया और गांवों में सुरक्षा और विकास सुनिश्चित किया।

धार्मिक और सांस्कृतिक योगदान

शिवाजी महाराज धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण के साथ धार्मिक स्वतंत्रता के समर्थक थे। उन्होंने मंदिरों और धार्मिक स्थलों की रक्षा की और जनता को धार्मिक स्वतंत्रता दी। वे मराठा संस्कृति और लोक परंपराओं के संरक्षण में विश्वास रखते थे। उनके शासन में साहित्य, कला और संगीत का विकास हुआ।

शिवाजी जयंती का महत्व

शिवाजी जयंती महाराष्ट्र सहित पूरे भारत में मनाई जाती है। यह पर्व शिवाजी महाराज की वीरता, साहसिक नेतृत्व और राष्ट्रभक्ति की स्मृति में आयोजित किया जाता है।

जयंती पर आयोजन

स्कूल और कॉलेजों में रैली, नाटक और भाषण प्रतियोगिता की जाती है। विभिन्न संगठनों और सरकारी विभागों द्वारा वीरता पुरस्कार और सम्मान समारोह किए जाते हैं। महाराष्ट्र में शिवाजी मंदिरों और स्मारकों पर विशेष पूजा और प्रार्थना की जाती है।

जनता की भागीदारी

लोग अपने घरों और सार्वजनिक स्थानों पर झंडे, बैनर और पोस्टर लगाते हैं। विशेष रूप से बच्चों और युवाओं में यह पर्व देशभक्ति और नेतृत्व की भावना को प्रोत्साहित करता है।

सांस्कृतिक कार्यक्रम

शिवाजी जयंती पर नाट्य, संगीत और लोकनृत्य के माध्यम से शिवाजी माराज की जीवन गाथा और वीरता का प्रदर्शन किया जाता है। यह सांस्कृतिक कार्यक्रम समाज में समानता, न्याय और साहस की भावना को जगाते हैं।

राष्ट्रीय महत्व

शिवाजी जयंती केवल महाराष्ट्र तक सीमित नहीं है, बल्कि यह पूरे भारत में एक प्रेरक त्योहार के रूप में मनाई जाती है। यह हमें याद दिलाता है कि देशभक्ति, साहस और निष्ठा के गुण हमेशा सम्मानित होते हैं।

देशभक्ति का संदेश

शिवाजी महाराज ने देश की स्वतंत्रता और सुरक्षा के लिए अपने जीवन को समर्पित किया। उनकी जीवन-गाथा युवाओं को साहस, नेतृत्व और देशभक्ति की प्रेरणा देती है।

युवाओं के लिए प्रेरणा

आज के समय में युवाओं को शिवाजी जयंती के माध्यम से नेतृत्व, रणनीति और धैर्य की सीख मिलती है। यह उन्हें समाज और राष्ट्र के लिए योगदान देने की प्रेरणा देती है।

समानता और न्याय की शिक्षा

शिवाजी महाराज का जीवन यह सिखाता है कि सच्चा नेता वही होता जो न्याय और समानता के सिद्धांतों का पालन करता है।

निष्कर्ष -

शिवाजी महाराज का जीवन और उनकी वीरता भारतीय इतिहास के लिए अमूल्य हैं। शिवाजी जयंती केवल उनके जन्मदिन का उत्सव नहीं है, बल्कि यह हमें उनके साहस, नेतृत्व, न्यायप्रियता और समाज सेवा के गुणों की याद दिलाती है। यह पर्व हमें यह संदेश देता है कि देशभक्ति, न्याय और समानता के सिद्धांत हमेशा जीवन का मार्गदर्शन करते हैं। बच्चों, युवाओं और समाज के सभी वर्गों को शिवाजी महाराज के आदर्शों से प्रेरणा लेकर अपने जीवन में साहस, नेतृत्व और नैतिकता का पालन करना चाहिए।

इस प्रकार शिवाजी जयंती एक ऐसा पर्व है जो हमें अपने इतिहास और संस्कृति से जोड़ता है, और हमें यह याद दिलाता है कि सच्चा नेता वही है जो अपने लोगों के लिए समर्पित और न्यायप्रिय हो। जय शिवाजी। ❐

आध्यात्मिक ऊर्जा और चेतना प्राप्त करने का व्रत

■ श्वेत कमल

महाशिवरात्रि सनातनी परम्परा से एवं आस्थावान हिन्दुओं के भक्तिमय धर्माचरण से जुड़ा एक प्रमुख त्योहार है, जो फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी (फरवरी-मार्च) को मनाया जाता है, जिसे महादेव और माता पार्वती के विवाह, महादेव के तांडव नृत्य के प्राकट्य, और समुद्र मंथन में हलाहल विष पीने की रात्रि के रूप में मनाया जाता है, जिसमें शिवभक्त शिवलिंग पर जल, दूध, बेलपत्र चढ़ाकर और रात्रि जागरण कर "ॐ नमः शिवाय'' का जाप करते हैं।

वास्तव में ये शिव और शक्ति के ज्योतिर्मय एकाकार मिलन की रात्रि, और आध्यात्मिक ऊर्जा के जागरण-समारोह के रूप में मनाया जाता है। यह त्योहार देवों के देव महादेव और माता शक्ति के मिलन का प्रतीक है, जो आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महत्व रखता है और समस्त भारतीय उपमहाद्वीप में अनेकानेक आचार-विचार सहित कई देशों में धूमधाम और उत्साह से साथ मनाया जाता है।

मुख्य बातें :-

1- कब मनाते हैं : फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी (फरवरी या मार्च)।

2- क्यों मनाते हैं : शिव-पार्वती विवाह, शिव के तांडव नृत्य, ज्योतिर्लिंग प्रगट होने का दिन, और सृष्टि के उद्धार के लिए शिव द्वारा विषपान (नीलकंठ बनना)।

3- कैसे मनाते हैं :

पूजा : जलाभिषेक, दुग्धाभिषेक, बेलपत्र, फूल, धूप-दीप अर्पित करना, सिंदूर लगाना।

मंत्र जाप : "ॐ नमः शिवाय'' का जाप

व्रत : निर्जल या फलाहार व्रत, रात्रि जागरण।

स्थान : शिव मंदिरों, ज्योतिर्लिंगों और पवित्र जल स्रोतों (जैसे गंगा) पर स्नान।

महत्व : भोग और मोक्ष की प्राप्ति, आध्यात्मिक शिखर तक पहुंचने में मदद, प्रकृति और पुरुष (शिव-शक्ति) के मिलन का प्रतीक।

महाशिवरात्रि मनाने के मुख्य कारण :-

शिव-पार्वती विवाह: शिव महापुराण के अनुसार, इसी दिन भगवान शिव और देवी पार्वती का विवाह हुआ था,

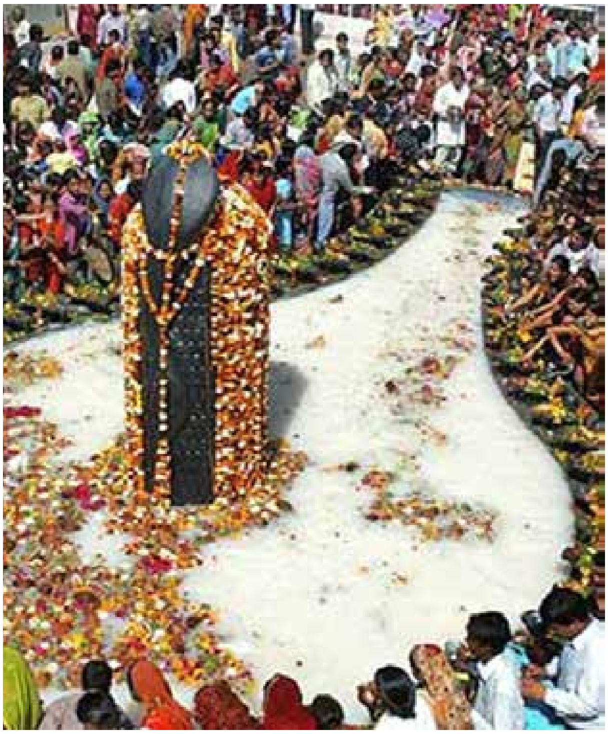

और वे गृहस्थ जीवन में प्रवेश किए थे, इसलिए यह विवाह का उत्सव है।

ज्योतिर्लिंग का प्राकट्य: पौराणिक कथा है कि फाल्गुन माह की इस चतुर्दशी तिथि को भगवान शिव पहली बार एक विशाल अग्नि स्तंभ (ज्योतिर्लिंग) के रूप में प्रकट हुए थे, जिसका पूजन ब्रह्मा और विष्णु ने किया था।

नीलकंठ का प्राकट्य (समुद्र मंथन): समुद्र मंथन के दौरान निकले विष को शिवजी ने पीकर सृष्टि को बचाया था, जिससे उनका कंठ नीला पड़ गया और वे 'नीलकंठ' कहलाए। इस घटना की याद में भी यह पर्व मनाया जाता है।

ब्रह्मांडीय नृत्य (तांडव): यह वह रात है जब शिव अपना तांडव नृत्य करते हैं, जो सृजन, संरक्षण और विनाश के चक्र का प्रतीक है, और भक्तों को चेतना के जागरण से जोड़ता है।

अंधकार पर विजय: महाशिवरात्रि 'अंधकार और अज्ञान पर विजय' पाने का पर्व है, जिसके लिए भक्त रात भर जागकर ध्यान और प्रार्थना करते हैं।

क्या करते हैं भक्तः-

1- शिवलिंग का अभिषेक करते हैं।

2- रात भर जागकर भजन-कीर्तन- जाप अर्थात जागरण करते हैं।

3- महादेव के साक्षात् जाग्रत स्वरूप महामृत्युंजय मंत्र (पूर्ण रूप) का जाप कर अकाल मृत्यु के भय से मुक्ति।

'ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं हौं ॐ'

मंत्र का अर्थः

हम तीन नेत्रों वाले, सुगंधित, पोषण करने वाले भगवान की पूजा करते हैं। जैसे ककड़ी अपनी बेल से अलग होती है, वैसे ही हम मृत्यु से मुक्त हों, अमरता से नहीं।

सात्विक-पूजन पद्धति सहित व्रत रखते हैं और महादेव से सांसारिक सुख-शांति व समृद्धि के साथ-साथ आंतरिक आध्यात्मिक दर्शन एवम अद्‌भुत अद्वैत दर्शन का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं एवं ध्यान और प्रार्थना के माध्यम से अपनी आंतरिक चेतना को बढ़ाते हैं।

शिवरात्रि के 4 प्रकार कौन से हैंः-

प्राचीन ग्रंथों के अनुसार एक वर्ष में 4 प्रमुख एवं शक्तिशाली शिवरात्रि होती हैं-

1- महाशिवरात्रि, 2- नित्य शिवरात्रि, 3- मासिक शिवरात्रि और 4- सावन शिवरात्रि।

महाशिवरात्रि भगवान शिव का सबसे भव्य उत्सव है, जो फाल्गुन माह के 14वें दिन मनाया जाता है।

महाशिवरात्रि के प्रसादः- फलाहारी खीर।

महाशिवरात्रि के दिन महादेव के हर भक्त उन्हें प्रसन्न करने के लिए उपवास रखता है। ऐसे में महाशिवरात्रि के दिन भोलेबाबा के प्रसाद में फलाहारी साबुदाना या मखाने की खीर का भोग- प्रसाद बनाते हैं।

इसके साथ पूजा के दौरान उन्हें अर्पित करने के लिए गंगाजल अथवा शुद्ध जल, दूध, दही, शक्कर, वस्त्र, जनेऊ, बेल अथवा शमी पत्र, भांग, आक का पत्ता, सफेद पुष्प, मदार के पुष्प, सफेद चंदन, अक्षत, पान, सुपारी, लौंग, इलायची, इत्र, कपूर, धूप, शिवरात्रि व्रत कथा और चालीसा आदि की सस्वर पाठ किया जाता है।

स्वीकार है मुझे...

– श्वेत कमल

सनातनी हिंदुत्व है गौरव मेरा,
और यह गरिमा सहृदय स्वीकार है मुझे,
हां, बहुदेववादी आस्था है मेरी,
और यह संबोधन सहर्ष, अंगीकार है मुझे।
ये हजारों फूल और लाखों ये पत्ते,
ये कमल, गुलाब, ये बेला चमेली,
ये आम से लेकर,नीम के, बरगद के और पीपल के पत्ते,
ये नदियां की लहरों में,
गंगा और जमुना का, कृष्णा-कावेरी का,
शिप्रा संग, नर्मदा- नर्मदेश्वर का पूजन परिभ्रमण,
गिरिराज जी का भक्तिमय, दंडवत परिक्रमण,
ये पूजन, ये वंदन,
ये चंदन सी माटी और माटी का पूजन,
ये पूजा की शैली, ये सात्विक- सा भोजन,
सर्प से लेकर, गोवंश तक के पूजन-अर्चन का,
सार्वभौमिक, अधिकार है मुझे।

सनातनी हिंदुत्व है गौरव मेरा,
और यह गरिमा सहृदय स्वीकार है मुझे,
हां, बहुदेववादी आस्था है मेरी,
और यह संबोधन सहर्ष, अंगीकार है मुझे।

चल हो, अचल हो या निराकार एवम साकार हो,
लघु से लेकर दीर्घ तक का विस्तार हो,
तंत्र मंत्र हो या यंत्र साधना,
मौन हो या सघोष आराधना,
प्रकृति का हर वंदन,
प्रकृति के वंदन का हर सनातनी प्रबंधन,
स्वीकार है मुझे,

सनातनी हिंदुत्व है गौरव मेरा,
और यह गरिमा सहृदय स्वीकार है मुझे,
हां, बहुदेववादी आस्था है मेरी,
और यह संबोधन सहर्ष, अंगीकार है मुझे।

गीजर की सावधानी

■ विनोद श्रीवास्तव

क्या आप भी नहाते समय गीज़र चालू छोड़ देते हैं? सर्दियों में ये बहुत आम बात है। शॉवर चालू है, गीज़र भी ऑन है और हम आराम से नहा रहे होते हैं। धीरे-धीरे ये आदत बन जाती है और खतरे का एहसास ही नहीं रहता। जबकि गीज़र कोई साधारण मशीन नहीं है। उसके अंदर तेज़ शक्ति वाली हीटिंग रॉड होती है, जो लगातार पानी गर्म करती रहती है।

गीज़र देर तक चालू रहने पर उसके अंदर तापमान और दबाव बढ़ता जाता है। ज़्यादातर हादसे यहीं से शुरू होते हैं। गीज़र ब्लास्ट अक्सर मशीन की नहीं, हमारी लापरवाही की कहानी होते हैं।

थोड़ी-सी लापरवाही क्या कर सकती है?

- ज्यादा गरमी और अंदर दबाव बनना
- बिजली का झटका लगने का खतरा
- पुराने गीज़र में फटने का जोखिम
- वायरिंग और स्विच पर अतिरिक्त लोड

ज़रूरी सावधानियाँ जो हर घर में अपनानी चाहिए:

- नहाने से पहले पानी गर्म करें और फिर गीज़र बंद कर दें
- शॉवर हो या बाल्टी, नहाते समय गीज़र चालू न रखें
- बंद बाथरूम में शॉवर न लें, सही वेंटिलेशन बहुत ज़रूरी है
- एग्ज़ॉस्ट फैन या खिड़की ज़रूर हो ताकि गरमी और गैस बाहर निकल सके
- सही अर्थिंग और एम सी बी ध आर सी सी बी की व्यवस्था होनी चाहिए
- बहुत पुराना या लीकेज वाला गीज़र इस्तेमाल न करें

यदि घर में गैस गीज़र (Gas Geyser) लगा है, तो बाथरूम में वेंटिलेशन (खिड़की/एग्जॉस्ट फैन) न होना जानलेवा साबित हो सकता है। गैस गीज़र ऑक्सीजन जलाकर कार्बन मोनोऑक्साइड छोड़ता है, जिससे व्यक्ति बेहोश हो सकता है और दम घुटने से मौत भी हो सकती है।

ऑटो-कट पर निर्भर न रहें

पुराने या खराब रखरखाव वाले गीज़र में थर्मोस्टेट फेल हो सकता है। यह वह पुर्जा है जो पानी गर्म होने पर बिजली काट देता है। अगर यह काम न करे, तो गीज़र के अंदर दबाव कुकर की तरह बढ़ता जाता है और अंततः वह बम की तरह फट सकता है।

गीज़र सुविधा के लिए है, आदत के लिए नहीं। थोड़ी-सी सावधानी आपको बिजली के बिल से भी बचाती है और किसी बड़े हादसे से भी। क्या थोड़ी-सी सुविधा किसी बड़े खतरे से ज्यादा ज़रूरी है?

यौन शिक्षा नहीं, अपितु योग-शिक्षा चाहिए

■ गंगा प्रसाद 'सुमन'

सरकार की ओर से विद्यालयों में कक्षा छह से बारहवीं तक यौन शिक्षा देने का निर्णय किया गया है। दिल्ली सरकार के शिक्षा विभाग ने सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों को यौन शिक्षा की जानकारी देने के लिए युवा पाठ्यक्रम तैयार कर अभियान चलाया था। यह भी तय किया गया है कि विद्यालयों में यौन शिक्षा देने के लिए एक वर्ग भी रखा जाएगा। तर्क यह भी दिया जा रहा है कि आज बदलती हुई भावनाओं के अनुसार उन्हें समझाया जाएगा। तर्क यह भी दिया जा रहा है कि व्यक्ति को समय-समय बीमार होने पर दवा खानी पड़ती है। बीमार पड़ने पर केवल प्रकृति के भरोसे नहीं छोड़ा जा सकता। यह तर्क कितना हास्यास्पद है कि दवा खाते रहो और बीमार पड़ते रहो। वास्तव में तो चिकित्सा करने की अपेक्षा बीमारी की रोकथाम पहले की जाए, न कि बाद में।

विद्यालयों में यौन शिक्षा देने के विरोध में समस्त बौद्धिक जगत में खलबली मची हुई है। शिक्षाविदों के भी विरोध स्वर उभरने लगे हैं। सरकार फूल से कोमल, भोले-भाले और पावन हृदय वाले बच्चों में यौन शिक्षा देकर विषैले बीज बो रही है, बच्चों का अपना अलग ही कल्पना संसार होता है। वे भावनात्मक स्वच्छन्द वातावरण में पलते हैं। उनके भाव-जगत में कामवासनाओं और दूषित विकृतियों का क्या काम! इसके विपरीत जो सुप्त भावनाएं हैं उन्हें यौन शिक्षा देकर उदीप्त करने का प्रयास हो रहा है, कामाग्नि को धध काया जा रहा है। अल्पआयु व कोमल मस्तिष्क में बाल-क्रीड़ा के स्थान पर काम-क्रीड़ा का खेल खेला जा रहा है।

सृष्टि के इस जीव जगत में यौन शिक्षा की कोई आवश्यकता नहीं होती। प्रकृति सही समय आने पर सहज ही ज्ञान करा देती है। बीहड़ जंगल में जनजातियों व जीव-जन्तुओं को इसकी कोई शिक्षा नहीं देता फिर भी वे मानव की अपेक्षा नियमानुसार संयमी और ऋतुगामी होते हैं। युग-युगों से यह रीति-सृष्टि क्रम से परम्परागत निभाई जा रही है। ये सब जिम्मेदारियां प्रकृति की हैं। मानव ने जब कभी प्रकृति के साथ खिलवाड़ किया है, उसके परिणाम भयंकर ही सिद्ध हुए हैं।

कुछ काम ऐसे होते हैं जिन्हें सार्वजनिक नहीं किया जा सकता। शौच-मल-मूत्र आदि जैसी गुप्त क्रियाओं के लिए निश्चित स्थान व समय होते हैं। हर स्थान पर इनकी चर्चा करना असभ्यता व अश्लीलता कही जाएगी। इसी प्रकार यौन सम्बन्धी खुली क्रियाएं सामाजिक रूप से सभ्यता और संस्कृकति के रूप में अमान्य तो है ही, अपितु कानूनी रूप से भी वर्जित है। जब सरकार की ओर से ही यौन क्रियाएं, उनका प्रदर्शन तथा ब्लू फिल्मों का दिखाना सार्वजनिक कानूनी अपराध है तो बताइए सरस्वती के मंदिर कहे जाने वाले विद्यालयों में उनका औचित्य कहां ठहरता है?

ऋषि-मुनियों के भारत देश में आयु के अनुसार चार आश्रमों में विभाजन किया गया है, जिसमें 25 वर्ष की आयु तक ब्रह्मचर्य आश्रम सुनिश्चित है। यही आश्रम ऐसा है जिसमें तन-मन बुद्धि की निर्मलता से आगे की जीवन यात्रा प्रशस्त होती है। ब्रह्चर्य आश्रम में तो दूषित प्रवृत्तियों, कुवासनाओं व वैचारिक-प्रदूषणों का वर्जन होता है। इस पूर्ण वैज्ञानिक आदर्श बह्मचर्य आश्रम को वासना का प्रांगण मत बनने दीजिए।

जिस प्रकार परिपक्व घड़े में रखा जल ही रूचिकर लगता है, कच्चे घड़े में नहीं। उसी प्रकार यौन शिक्षा के लिए बालक की आयु में तथा शरीरिक, मानसिक बौद्धिक और सामाजिक परिपक्वता नितान्त आवश्यक है। कानून की ओर से जब 18 वर्ष की कम आयु वाले को मत देने का अधिकार भी नहीं है, तो भला यौन शिक्षा के लिए यह आयु कैसे संभव हो सकती है?

सरकार एड्स की बीमारी दूर करने के लिए छोटी कक्षाओं से ही यौन-शिक्षा देने का समर्थन कर रही है। एड्स के फैलाव का मुख्य कारण जनता में सेक्स की जानकारी का अभाव माना जा रहा है, लेकिन यह केवल भ्रम ही है।

कारण कुछ और ही है। एड्स के फैलने के मुख्य कारण हैं अनैतिक यौन सम्बन्ध, निर्बाध काम वासना, अप्राकृतिक सम्बन्ध, पर-स्त्री व पर पुरुष संगतिकरण आदि। दुष्कर्म और कुकर्म तथा प्रकृति के विरुद्ध कार्य करने से प्रकृति कभी क्षमा नहीं करती। सर्वेक्षण से सिद्ध हो चुका है कि छोटे बच्चों की अपेक्षा बड़ों को ही एड्स की बीमारी अधिक होती है। छोटों को तो यह बीमारी उनके माता-पिता की देन है, उनकी अपनी नहीं। यौन शिक्षा तो बड़ों को देनी चाहिए, अल्पायु के कोमल बच्चों को नहीं।

जब कच्ची कोमल कलियों को कामोत्तेजक टी.वी चैनल के सीरियल, अश्लील चलचित्र, ब्लू फिल्में, अश्लील साहित्य, पत्र-पत्रिकाओं व साइन बोर्डों पर नारी के नग्न चित्र मन-मस्तिष्क में परोसे जाएंगे तो अनियन्त्रित उन्माद भला क्यों न उत्पन्न होगा? परिणामस्वरूप वे अपने अध्ययन काल में पिछड़ जाते हैं और उनका चारित्रिक हनन होकर भावी कॅरियर भी अर्श पर चढ़ते-चढ़ते फर्श पर आ गिरता है।

सरकार का स्पष्ट मत होना चाहिए कि यौन-शिक्षा न देकर योग शिक्षा का निश्चित रूप में प्रावधान करे जो सभी प्रकार से आनन्द का भण्डार है। योग साधना से तन-मन-बुद्धि स्वस्थ, शुद्ध और निरोग बने रहते हैं। शरीर के विषैले तत्व दूर होते हैं। संयमी और साधनामय जीवन बनाता है।

विद्यालयों को सरस्वती का मंदिर कहा जाता है। कक्षा में जब इसका पीरियड चल रहा होगा तो छात्र शिक्षक के समक्ष किस प्रकार के प्रश्नोत्तर कर रहा होगा, विचारणीय विषय है। शिक्षक व शिष्य के मध्य उस समय 'लाज' 'शर्म' अवमानना की रेखा क्या खिंची रहेगी? कक्षा में ही भौंडे मजाक, अश्लील हास्य, अभद्र हाव-भाव, दूक्षित वातावरण की सृष्टि क्या ये न कर पाएंगे? सह शिक्षा वाले कक्ष में तो नयनों के व्यंग्य वाणों को चलाने से भला कौन रोक पाएगा? स्कूल के पूर्ण अवकाश होने पर तो खुलेआम चौराहों पर ही अभद्र प्रदर्शन की व्यवहारिकता का नग्न नृत्य देखने को मिलेगा। कक्षा में जो थ्योरी पढ़कर आए हैं, अपने-अपने घर जाकर यदि छात्र प्रेक्टिकल करने लगे तो इसमें क्या है? अपने घर में आए हुए अतिथि के सामने अपने माता-पिता से ही जिज्ञासावश चित्र-विचित्र प्रश्नों के उत्तर चाहेगा तो क्या उनके ड्राइंग रूम का वातावरण दयनीय न बन जाएगा? विचारिए ।

शारीरिक विज्ञान से सम्बन्धित पथ-प्रदर्शन का अधिकार केवल योग्य डाक्टर्स को ही है, अध्यापकों को नहीं। अध्यापक तो परम्परागत बी.एस.सी., एम. एड. है, यौन-शिक्षा उनका विषय ही नहीं है। उनके विषय के विपरीत शिक्षा देना दिशाहीन, भ्रामक व भयावह हो जाएगी। चिकित्सा के व्यवसाय में भी तो डाक्टर अपने-अपने विषय के विशेषज्ञ होते हैं। नेत्र विशेषज्ञ डॉक्टर हर्ट की बाई-पास सर्जरी नहीं कर पाएगा।

इन सबके पीछे यू.एन.ओ., वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गेनाइजेशन एवं बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के कुचक्र का खेल खेला जा रहा है। अमेरिका और यूरोप की बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा कण्डोम, गर्भ निरोधक गोलियां, मादक दवाएं, नशीले मादक द्रव्य आदि उत्पादित माल के लिए भारत को बड़ा बाजार बनाकर आर्थिक स्वार्थ की पूर्ति की जा रही है। इन कम्पनियों का षड्यंत्र है कि आने वाली पीढ़ी को निर्वीर्य व निस्तेज बनाया जाए। इन कम्पनियों के सर्वेक्षण भी सन्देहास्पद, अविश्वनीय और अतिशयोक्तिपूर्ण भी होते हैं ।

सरकार का स्पष्ट मत होना चाहिए कि यौन-शिक्षा न देकर योग शिक्षा का निश्चित रूप में प्रावधान करे जो सभी प्रकार से आनन्द का भण्डार है। योग साधना से तन-मन-बुद्धि स्वस्थ, शुद्ध और निरोग बने रहते हैं। शरीर के विषैले तत्व दूर होते हैं। संयमी और साधनामय जीवन बनाता है। मन और इन्द्रियां नियन्त्रित व मर्यादित रहती हैं। मन शिव संकल्प धारण करता है। प्राण वायु का संचार होता है। ब्रह्मचर्य और वीर्य की रक्षा होती है जो शरीर का सम्राट है।

स्कूल में यौन शिक्षा देने के लिए इतना हो-हल्ला क्यों किया जा रहा है? इसके स्थान पर संस्कार निर्माण, नैतिक शिक्षा, सदाचार, चरित्र निर्माण, सभ्यता-संस्कृति की अवधारणा, दैदीप्यमान महापुरुषों के चरित्र आदि पर जोर क्यों नहीं दिया जाता? समाज के कर्णधारों को चाहिए कि भावी पीढ़ी को गहन गर्त में जाने से बचाएं, भोग-रोग से बचाएं। पाश्चात्य देश की अन्धी दौड़ में हम न दौड़ें। यौन शिक्षा के प्रस्ताव का अग्नि संस्कार होना चाहिए। महाभारत के महानायक श्रीकृष्ण का योगीश्वर रूप हमारा आदर्श होना चाहिए। ❒

सीपीआर प्रशिक्षण : आपदा प्रबंधन टोली, दिल्ली प्रान्त

■ डॉ. संजय जिन्दल (आपदा प्रबंधन प्रमुख) और श्री कौशल (आपदा प्रबंधन सह-प्रमुख)

गत 21 जनवरी, बुधवार को महाराज अग्रसेन हॉस्टिल, पंजाबी बाग में सीपीआर (कार्डियोपलेनरी रिससिटेशन) प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित हुआ। यह कार्यक्रम बेसिक लाइफ सपोर्ट सिस्टम के अंतर्गत आयोजित किया गया, जिसका उद्देश्य आपात स्थितियों में जीवन रक्षक प्रक्रियाओं के बारे में आवश्यक जानकारी और वास्तविक प्रशिक्षण प्रदान करना था। प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों को सीपीआर से संबंधित जानकारी प्रदान की गई। उन्हें बताया गया कि हृदय गति या सांस रुकने की स्थिति में प्रारंभिक कुछ मिनट अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं तथा समय पर किया गया सीपीआर किसी व्यक्ति के जीवन को बचाने में निर्णायक भूमिका निभा सकता है।

प्रशिक्षण का संचालन डॉ. दीपक सिंगला, एमडी द्वारा किया गया। प्रशिक्षण द्वारा सीपीआर की मानक प्रक्रिया को चरणबद्ध रूप से समझाया गया, जिसमें छाती पर दबाव (चेस्ट कंप्रेशन), सही गति एवं गहराई, तथा श्वसन सहायता की तकनीकों की जानकारी दी गई। इसके पश्चात डमी/मॉडल के माध्यम से सीपीआर का प्रत्यक्ष प्रदर्शन किया गया, जिससे प्रतिभागियों को सही विधि को समझने में सुविधा हुई।

प्रशिक्षण के व्यावहारिक भाग में प्रतिभागियों को स्वयं अभ्यास करने का अवसर प्रदान किया गया। प्रशिक्षकों द्वारा अभ्यास के दौरान आवश्यक सुधार सुझाए गए तथा आमतौर पर होने वाली गलतियों के प्रति भी जागरूक किया गया।

इसके अतिरिक्त, आपात स्थिति में घबराहट से बचते हुए सुरक्षित निर्णय लेने, आसपास के लोगों से सहयोग प्राप्त करने तथा प्राथमिक चिकित्सा सेवाओं को समय पर सूचित करने पर विशेष जोर दिया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में आपदा प्रबंधन टोली, दिल्ली प्रान्त के 20 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण के उपरांत सभी प्रतिभागियों को सहभागिता प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए। प्रशिक्षण के दौरान किए गए अभ्यास के माध्यम से प्रतिभागियों को सीपीआर की प्रक्रिया को बेहतर ढंग से समझने का अवसर मिला। कार्यक्रम के समापन पर प्रतिभागियों द्वारा प्रशिक्षण को उपयोगी बताया गया। प्रशिक्षण के सफल समापन के बाद सभी प्रतिभागियों के लिए जलपान की व्यवस्था भी की गई। इस प्रकार यह प्रशिक्षण कार्यक्रम उद्देश्यपूर्ण एवं सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। ❐

भगवान सत्यनारायण की कथा एवं पूजा

सेवा भारती, स्ट्रीट चिल्ड्रन प्रकल्प, केशव सेवा केंद्र, कलंदर कॉलोनी, दिलशाद गार्डन में दिनांक 03 जनवरी 2026 दिन शनिवार को पौष महीने की पूर्णमासी के शुभ अवसर पर भगवान सत्यनारायण की कथा एवं पूजा का आयोजन हुआ। कार्यक्रम में श्री मानवेन्द्र जी (माननीय संगठन मंत्री) का भी आगमन हुआ। श्री मानवेन्द्र जी एवं प्रकल्प कार्यकारिणी के सदस्य श्री अविनाश गुप्ता और श्रीमती सुषमा गुप्ता के द्वारा दीप प्रज्वलन के उपरांत कार्यक्रम की विधिवत शुरुआत हुई। कथा एवं पूजन के उपरांत बस्ती की भजन मंडली के द्वारा भजन एवं कीर्तन का गायन हुआ। श्री गणेश जी एवं भगवान शंकर जी के भजनों से प्रारम्भ होने के बाद अन्य सभी देवीख्रदेवताओं के भजनों का गायन हुआ। कार्यक्रम में लगभग 80 महिलाओं ने सहर्ष भाग लिया तथा भजन कीर्तन के कार्यक्रम को सफल बनाया। कार्यक्रम के उपरांत सभी सहभागियों को प्रसाद के रूप में कसार, पंचामृत एवं केले का वितरण किया गया। ❐

77वां गणतन्त्र दिवस समारोह सम्पन्न

सेवा भारती, स्ट्रीट चिल्ड्रन प्रकल्प, कलंदर कॉलोनी, दिलशाद गार्डन में 25 जनवरी 2026, रविवार को गणतन्त्र दिवस समारोह धूमधाम से मनाया गया। समारोह का शुभारंभ प्रातः 11.00 बजे दीप प्रज्ज्वलन एवं ध्वजारोहण के साथ हुआ। कार्यक्रम में शाहदरा विधानसभा के माननीय विधायक श्री संजय गोयल जी मुख्य अतिथि, श्री मुकेश गौतम जी मुख्य वक्ता, डॉ. अरविंद गुप्ता जी कार्यक्रम अध्यक्ष, एवं श्री राजनारायन जी (संगठन मंत्री, यमुना विहार विभाग, सेवा भारती) आदि महानुभावों का आगमन हुआ। कार्यक्रम के शुभारंभ के बाद सरस्वती वंदना के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रमों की शुरुआत हुई। इसके बाद कई प्रकार के लोक नृत्यों का भी मंचन बालक एवं बालिकाओं के द्वारा हुआ। केंद्र में पढ़ने वाले बच्चों द्वारा बहुत ही आकर्षक योग एवं पिरामिड का प्रदर्शन भी किया गया।

कार्यक्रम के मध्य में मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता का उद्बोधन भी हुआ। माननीय योगेंद्र पाल सलोटा जी ने कार्यक्रम में पधारे सभी आगंतुकों का धन्यवाद ज्ञापन किया। इसके बाद दोपहर 01ए.0 बजे वंदे मातरम के साथ ध्वजा अवतरण हुआ।

कार्यक्रम के पश्चात उपस्थित सभी लोगों ने पूरी-सब्जी एवं हलवे का प्रसाद ग्रहण किया। और इस प्रकार केंद्र में 77वां गणतन्त्र दिवस सम्पन्न हुआ। ❐

श्री-श्री सरस्वती पूजन 2026

सेवा भारती, स्ट्रीट चिल्ड्रन प्रकल्प, कलंदर कॉलोनी, दिलशाद गार्डन, दिल्ली में हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी वसंत पंचमी पर माँ सरस्वती का पूजन कियागया। सात दिन तक मनाया जाने वाला यह पर्व 23 जनवरी, शुक्रवार को विधिवत देवी पूजन के साथ प्रारम्भ हुआ। पूजन के कार्यक्रम में केंद्र में पढ़ने वाले बच्चों एवं उनके माता पिता ने भी सहर्ष भाग लिया। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी यह कार्यक्रम पुरातन छात्र एवं छात्राओं के सहयोग के साथ सम्पन्न हुआ। मुख्य पूजन के बाद बस्ती की महिलाओं द्वारा भजन कीर्तन का कार्यक्रम भी हुआ। 24, 26 एवं 27 जनवरी को भी बस्ती की महिलाओं द्वारा भजन कीर्तन का कार्यक्रम हुआ। 28 जनवरी को सभी के लिए सामूहिक भोजन की व्यवस्था थी। भोजन का प्रसाद पुरातन छात्रों के द्वारा बनाया गया, जिसमें कढ़ी-चावल-पापड़ आदि की व्यवस्था थी, सभी ने प्रसाद ग्रहण किया। प्रसाद ग्रहण करने वालों की संख्या लगभग 250 रही। 29 जनवरी को प्रसिद्ध भजन गायक श्री हरीश कुमार

जी एवं उनकी टोली द्वारा मनमोहक सुंदरकांड का पाठ हुआ। यह पाठ प्रातः 11.00 बजे से दोपहर 02.00 बजे तक जारी रहा। इसके उपरांत सभी को खीर का प्रसाद वितरित किया गया। 30 जनवरी को प्रातः हवन के साथ माता की प्रतिमा का दोपहर 12 बजे से क्षेत्र भ्रमण हुआ। एवं सायं 04.00 बजे मुरादनगर स्थित गंग नहर में प्रतिमा का विधिवत रूप से विसर्जन करके पूजा का समापन हुआ। ❐

मनाई गई मकर संक्रांति

सेवा भारती, स्ट्रीट चिल्ड्रन प्रकल्प, केशव सेवा केंद्र कलंदर कॉलोनी, दिलशाद गार्डन में 15 जनवरी 2026 को मकर संक्रांति का कार्यक्रम सामूहिक हवन के साथ सम्पन्न हुआ। इस हवन कार्यक्रम में सेवा बस्ती से 15 यजमानों ने पंचकुंडीय हवन में भाग लिया। इस कार्यक्रम में कुल पाँच हवन कुंडों के द्वारा हवन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ, जिसमें से 4 हवन कुंडों में बस्ती के यजमानों के द्वारा एवं एक हवन कुंड में दिसंबर तथा जनवरी माह में जन्मदिन आने वाले 14 बच्चों ने सामूहिक हवन किया। यजमानों एवं बच्चों के अतिरिक्त सेवा बस्ती के लगभग 100 कार्यकर्ताओं ने भी हवन कार्यक्रम में सहर्ष भाग लिया। हवन के उपरांत बच्चों को उपहार स्वरूप स्टेशनरी का समान (रजिस्टर, कलम और ड्राइंग किट आदि) दिया गया तत्पश्चात उपस्थित सभी लोगों को खिचड़ी का प्रसाद वितरित किया गया। प्रसाद हेतु खिचड़ी की व्यवस्था केंद्र पर अध्ययन करने वाले बच्चों के द्वारा ही की गई थी। प्रसाद वितरण के उपरांत सम्मिलित सभी यजमानों एवं बच्चों को मूँगफली, रेवड़ी एवं फुले का प्रसाद वितरित किया गया। इस प्रकार इस वर्ष केंद्र में मकर संक्राति का महोत्सव सम्पन्न हुआ। ❐

मकर संक्रान्ति पर्व

गत 14 जनवरी को भाटी माइंस केन्द्र एवं चाणक्य केन्द्र संजय कैम्प, रामकृष्ण पुरम विभाग, सेवा भारती में शिक्षारत बच्चों और उनके अभिभावकों एवं सेवा भारती के कार्यकर्ताओं ने सामूहिक रूप से मकर संक्रान्ति पर्व मनाया। इस अवसर पर पूरे वक्ताओं ने इस पर्व पर अपने विचार भी रखे। ❐

वढेरा भवन में 'वुमेन फॉर भारत' की महिलाएं

गत 9 जनवरी को 'वुमेन फार भारत' की कुल 16 महिलाओं ने कम्युनिटी भ्रमण प्रोग्राम के अंतर्गत सेवा भारती डायग्नोस्टिक एंड डायलिसिस सेंटर, वढेरा भवन, अशोक विहार, दिल्ली का भ्रमण किया। इस पूरे कार्यक्रम का संयोजन निधि आहूजा जी ने किया। इस बैठक में शुकदेव जी, हेमंत जी व अन्य कार्यकर्ता भी शामिल रहे। इस दौरान उन्हें प्रकल्प दर्शन कराकर भवन में चल रही सभी स्वास्थ्य संबंधित गतिविधियों से परिचित कराया गया और परस्पर बातचीत के द्वारा उनके सवालों के जवाब भी दिए गए।

अच्छे नेतृत्व के लक्षण

- ख साथियों की कार्यकुशलता और आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए निरंतर प्रोत्साहित करना।
- ख सफलता का श्रेय पूरी टीम को देना और असफलता की ज़िम्मेदारी स्वयं लेना।
- ख निरंतर फीडबैक लेना, उससे सीखना और समय-समय पर सार्थक बदलाव लागू करना।
- ख मैं से 'हम' की मानसिकता।

सार : नेतृत्व पद से नहीं, प्रभाव से पहचाना जाता है। — ***डॉ. संजय जिंदल***

मानवता की सेवा में लगा 'अपना घर आश्रम'

■ संजय जिंदल

'अपना घर आश्रम', पंजाब खोर, दिल्ली उन असहाय, लावारिस, बीमार एवं मनोरोगी लोगों का आश्रय स्थल है, जिनका न कोई ठिकाना होता है और न ही स्वयं अपने जीवन की देखभाल करने की क्षमता। ऐसे प्रभुजन जिनका जीवन नरक से भी बदतर हो चुका होता है, जो जीवन के अंतिम पड़ाव में रेलवे प्लेटफार्म, धार्मिक स्थलों, सार्वजनिक स्थानों, फुटपाथों एवं अस्पतालों के आसपास मरणासन्न अवस्था में पीड़ा सहते हुए पड़े रहते हैं।

इन दीनजनों के लिए पीड़ा के समय न तो दवा उपलब्ध होती है, न पेट भरने के लिए भोजन, न तन ढकने के लिए वस्त्र और कई बार अंतिम समय में एक बूंद पानी भी नसीब नहीं होता। ऐसे करुणाजनक हालात में 'अपना घर आश्रम' इन प्रभुजनों को आश्रम में भर्ती कराकर उन्हें चिकित्सा, पौष्टिक भोजन, वस्त्र तथा ममतामयी सेवाएं प्रदान करता है। वर्तमान में आश्रम में 317 प्रभुजन सेवा प्राप्त कर रहे हैं।

इन्हीं प्रभुजनों में से एक हैं प्रभुजी श्री सुनील, जिन्हें पूठखुर्द, बवाना, दिल्ली क्षेत्र से रेस्क्यू किया गया था। उस समय उनकी मानसिक स्थिति अत्यंत दयनीय थी। आश्रम में भर्ती होने के उपरांत लगभग 10-11 माह तक निरंतर सेवा, उपचार एवं काउंसलिंग की गई। यह काउंसलिंग पदाधिकारी श्री शिव कुमार गर्ग एवं प्रभारी श्री सुमित शर्मा द्वारा की गई।

उपचार एवं संवाद के दौरान प्रभुजी द्वारा अपने घर का पता नांगलोई, दिल्ली बताया गया। पदाधिकारी की अनुमति उपरांत प्रभुजी श्री सुनील को आश्रम की गाड़ी द्वारा उनके घर भेजा गया। इस सेवा में चालक श्री प्रभुदयाल एवं सेवा साथी सचिन सम्मिलित रहे।

घर पहुंचाने के दौरान नांगलोई क्षेत्र में लगभग 6-8 घंटे तक इधर-उधर खोज करने के बाद प्रभुजी का वास्तविक घर गांव किरोड़ी, दिल्ली में मिला। जब प्रभुजी को उनके परिवार से मिलवाया गया तो परिवार की खुशी का ठिकाना नहीं रहा।

उनकी माँ ने बताया, ''मैंने तो सोचा कि मेरे बड़े बेटे नरेंदर ने अपने छोटे भाई सुनील को मरवा दिया है। दोनों भाइयो में जमीन को लेकर झगड़े होते रहते थे। इसलिए मैंने अपने बड़े बेटे के खिलाफ पुलिस रिपोर्ट भी करवा दी थी। केस भी चल रहा है। मैंने तो यह मान लिया था कि मेरा छोटा बेटा अब इस दुनिया में नहीं रहा। जिस दिन से वह घर से गायब हुआ था, उस दिन से मैं भी भीतर से मर चुकी थी।''

प्रभुजी की माता ने भावुक होकर कहा, "अपने बेटे से मिलकर मेरा तो पुनर्जन्म हो गया है।'' उन्होंने 'अपना घर आश्रम' की सेवा की सराहना करते हुए कहा, "आप लोग बहुत अच्छा और सच्चा कार्य कर रहे हैं। यही असली सेवा है।"

'अपना घर आश्रम', पंजाब खोर, दिल्ली समाज के उन भूले-बिसरे प्रभुजनों के लिए निरंतर सेवा, संवेदना और मानवता का संदेश देता हुआ कार्य कर रहा है। सेवा भारती दिल्ली प्रांत के माननीय अध्यक्ष श्री रमेश अग्रवाल मकर संक्रांति के दिन अपने पोते के जन्मदिन पर सपरिवार पत्नी, दोनों पोते तथा समधन जी के साथ आश्रम में पहुंचे। उन्होंने प्रभु जनों को भोजन-प्रशादी अपने हाथों से दी। ❐

भेंट की गई सहयोग राशि

ताहिरपुर में सेवा भारती द्वारा संचालित कुष्ठ आश्रम प्रकल्प, चिकित्सा सेवा एवं बालवाड़ी केन्द्र के लिए प्रो. आनन्द कुमार जी एवं रजनी शर्मा जी ने सहयोग किया। इसके लिए एक चेक डॉ. हरेन्द्र जी को भेंट किया गया। ❐

विवेकानन्द छात्रावास

सेवा भारती द्वारा पूर्वी विभाग में संचालित स्वामी विवेकानन्द छात्रावास में बच्चों का उत्साहवर्द्धन करते श्रीमती स्नेल बंसल जी, निधि रस्तोगी जी और श्रीमती स्नेल बंसल जी ने बच्चों को टिफिन वितरित किए। ❐

नवीन कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण

गत 11 जनवरी को पीण्जीण्डीएण्वीण महाविद्यालय, रिंग रोड लाजपत नगर, में सेवा भारती के नवीन कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण वर्ग आयोजित हुआ। इसमें दिल्ली के 4 विभागों (यमुना विहार, पूर्वी, दक्षिणी और आरण्केण्पुरम) के जिला एवं ऊपर के दायित्ववान नए कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण हुआ। इसमें चार विषयों पर चर्चा हुई। ये विषय हैंख्र 1ण संगठन की रीतिख्रनीति वर्ग के पूर्व तैयारी की पूछताछ। 2ण सेवा भारती और संघ का सेवा विभाग। 3ण्सेवा भारती की भौगोलिक व संगठनात्मक रचना। और 4ण्जिज्ञासा समाधान एवं भारतीय संस्कृति में सेवा का महत्त्व। इन सत्रों में वक्ता के रूप में क्रमशः प्रांत प्रशिक्षण प्रमुख श्री संजय गर्ग, प्रांत सह संगठन मंत्री श्री सुनील कुमार, प्रांत संगठन मंत्री श्री शुकदेव एवं प्रांत प्रचारक आदरणीय विशाल जी ने विषय प्रतिपादित किया। वर्ग में प्रशिक्षार्थियों की संख्या 48 रही। वर्ग बौद्धिक प्रमुख श्रीमती स्मिता नामजोशी थीं। व्यवस्था प्रमुख श्री राजेन्द्र ढींगरा एवं श्री प्रमोद रहे। ❐

सुन्दरकाण्ड पाठ

सेवा भारती, पश्चिमी विभाग, उत्तम जिला के शिवानी सेवा केन्द्र पर मकर संक्रान्ति के अवसर पर बस्तीजन और सेवा भारती के कार्यकर्ताओं ने मिलकर जन–जागरण हेतु श्रीरामायण–सुन्दरकाण्ड का पाठ किया। ❐

गोपालधाम छात्रावास में मकर संक्रान्ति पर्व

सेवा भारती द्वारा संचालित गोपालधाम छात्रावास, राम मन्दिर, रघुवीर नगर, केशव पुरम विभाग में 14 जनवरी, मकर संक्रान्ति के अवसर पर शिवाजी कॉलेज से आये छात्रों ने बच्चों के साथ मिलकर पर्व मनाया। साथ ही बच्चों को खाने की सामग्री दी गई और उनसे बातचीत की। गोपालधाम के बच्चों ने इस अवसर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर सबका मन मोह लिया। ❐

पूर्वी विभाग में सुन्दर कांड पाठ

गत 24 जनवरी को पूर्वी विभाग, इन्द्रप्रस्थ जिले में श्रीराम सेवा केन्द्र पर सुन्दर कांड का पाठ किया गया। विभाग मंत्री श्रीमती राजश्री एवं साथ ही कार्यकर्ता गण एवं शिक्षिका, निरीक्षिका, भजन मंडली और सेवितजन सम्मिलित हुए।

छात्रावास को मिली 18 बेडशीट

गत 22 जनवरी को स्व. सुरेश चन्द गोयल विवेकानन्द छात्रावास में श्रीमती भारती बंसल का प्रवास रहा। सेवितजनों एवं छात्रों से परिचय हुआ। अध्यक्ष श्री हरेन्द्र मोहन जी से मिलना हुआ। जरूरत को देखते हुए श्रीमती भारती बंसल ने 18 बेडशीट (चादर) एवं सामान छात्रावास के लिए दिए। ❐

शिक्षिका अभ्यास वर्ग

गत 15 जनवरी, दिन वीरवार को केशवपुरम विभाग के सरस्वती विहार जिले में शिक्षिका अभ्यास वर्ग आयोजित हुआ। इसमें जिला अध्यक्ष प्रमोद अग्रवाल जी, जिला उपाध्यक्ष विनोद जैन जी, जिला मंत्री अनुज जी, जिला कोषाध्यक्ष नरेश जी, अध्यक्षा आशा कथुरिया जी, पीतमपुरा नगर की कार्यकारिणी, शालीमार बाग नगर की कार्यकारिणी, निरीक्षिका, शिक्षिका सम्मलित हुई। सबसे पहले प्रार्थना, राष्ट्र गान, गीत, कविता, भजन हुआ। पीतमपुरा नगर के पूर्व अध्यक्ष व वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री बृजमोहन मित्तल की पोती के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में भाई साहब ने सभी शिक्षिका को उपहार में गर्म शॉल भेंट की। कल्याण मंत्र, भोजन के उपरांत कार्यक्रम का समापन हुआ। ❐

वाहन चालक प्रशिक्षण केंद्र का शुभारंभ

गत 31 जनवरी, दिन शनिवार को रोहिणी सेक्टर 22 में वाहन चालक प्रशिक्षण केंद्र का शुभारंभ माननीय जिला संघचालक श्री बलवंत के करकमलों से हुआ। इस अवसर पर उत्तरी विभाग अध्यक्ष श्री राजेंद्र मित्तल, पूर्व चेयरमैन नरेला जोन श्री जयेंद्र डबास, समाजसेवी श्री राजपाल गर्ग एवं श्री राजेंद्र सिंह तोमर, विभाग स्वावलंबन प्रमुख श्री श्याम तायल, विभाग कोषाध्यक्ष श्री महेश शमर्ज्ञ, विभाग सहमंत्री श्री सुदीप, जिला उपाध्यक्ष श्री सुनील गर्ग, जिला मंत्री श्री सुशील, जिला कोषाध्यक्ष श्री कृष्ण भट्ट, जिला आपदा प्रबंधन प्रमुख श्री सुरेंद्र शमर्ज्ञ, महिला समिति अध्यक्ष श्रीमती नीता सिंह तोमर, मंत्री श्रीमती नीलम वाधवा, सहमंत्री श्रीमती शोभा, जिला किशोरी विकास प्रमुख श्रीमती ललिता, पूर्व डिप्टी कमांडेंट सीआरपीएफ श्री देवकुमार, जिला निरीक्षिका श्रीमती द्रोपदी राठौर के अतिरिक्त कई प्रबुद्ध जन के अतिरिक्त प्रशिक्षण प्राप्त करने की इच्छुक किशोरियों की भी उपस्थिति रही। कार्यक्रम का आरंभ दीप प्रज्वलन एवं वाहन पूजन द्वारा किया गया। सुदीप जी ने प्रकल्प के विषय में सभी को जानकारी दी। 12 बच्चों का रजिस्ट्रेशन हो गया है। माननीय जिला संघचालक जी ने अपने उद्‌बोधन में शिक्षार्थियों का उत्साहवर्धन के साथ ही 21,000 रुपए का दान भी सेवा भारती को दिया एवं राजेंद्र जी ने धन्यवाद ज्ञापित किया। अंत में सभी ने जलपान का आनंद लिया। कुल संख्या 45 की रही। ❐

BANSAL WIRE INDUSTRIES LTD.

BANSAL

Stainless Steel Wires - High/Medium Carbon Steel Wires
(Black and Galvonised)

Mfrs. : Low Carbon Steel Wires, Profile/Shaped Wires
(Black and Galvonised)

H.B. HHB & G.I. WIRES

Bansal Wire Industries Ltd.
F-3, Shastri Nagar, Delhi-110052 (India)
Tel. : +91-11-23648401, 23651890-91-92-93
Email : info@bansalwire.com, www.bansalwire.com

धूमधाम से मना गणतंत्र दिवस

दिल्ली सेवा भारती, दक्षिणी विभाग के लाजपत जिले में जयदत्त सेवा केंद्र, मीरपुर बलिदान भवन, अशोक बिंदुसार बस्ती तथा जेण जेण कैम्प लोहार बस्ती में गणतंत्र दिवस 2026 के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम बहुत ही उत्साहपूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम में बाल संस्कार, किशोरी विकास एवं योग कक्षा के बालक एवं बालिकाओं ने देश-भक्ति के रस में डूबी अपनी प्रस्तुतियां दीं। देशभक्ति के गीत, नृत्य, नाटक व भाषण प्रस्तुत किए गए। कार्यकर्ताओं के साथ कुछ अभिभावक भी उपस्थित रहे। ❐

‘अनीता नवीन आदर्श चेरिटेबल रीडिंग रूम’ का उद्घाटन

गत 23 जनवरी को वसंत पंचमी के पावन अवसर पर जिला रोहतास नगर स्थित मोहन पार्क में एस आर कैपिटल स्कूल के सामने ‘अनीता नवीन आदर्श चैरिटेबल रीडिंग रूम’ का विधिवत उद्घाटन हुआ। यह केवल बालिकाओं के लिए है। सर्वप्रथम सरस्वती माता का पूजन किया गया तत्पश्चात हवन किया गया जिससे वातावरण भावपूर्ण हो गया। हवन में मुख्य यजमान श्री गौरव गोयल एवं श्रीमती इंदु गोयल रहीं। इंदु जी ने कैसे रीडिंग रूम बनाने का विचार कैसे आया और कैसे सेवा भारती के सहयोग से यह सपना साकार हुआ इसके बारे में बताया। इसके बाद विभाग महिला कार्य प्रमुख बहन बीना महतो जी ने सेवा भारती के कार्यों के बारे में जानकारी दी तथा उन्होंने अपने श्रीमुख से भजनों की प्रस्तुति करके वातावरण को गरिमामय एवं आनंदमय बना दिया। अंत में मुखर्जी स्कूल के पूर्व प्रधानाचार्य श्री नवीन चंद गोयल ने सभी का धन्यवाद किया। इस समारोह में यमुना विहार विभाग संघचालक माननीय श्री अरुण कुमार शर्मा, दिल्ली प्रांत सेवा भारती के महामंत्री श्री सुशील गुप्ता, यमुना विहार विभागाध्यक्ष सेवा भारती डॉ अरविंद गुप्ता, केंद्रीय मंत्री श्री हर्ष मल्होत्रा, विभाग मंत्री श्री गवेंद्र एवं विभाग संगठन मंत्री श्री मानवेन्द्र विशेष रूप से उपस्थित रहे। इस समारोह में 70 बंधुओं एवं भगिनियों ने भागीदारी की। ❐

रजिस्टर्ड क्रमांक 40605/1983
तिथि 10-11 फरवरी, 2026, प्रकाशन तिथि-6-7 फरवरी, 2026
Posted at - LPC, DELHI RMS, DELHI-110006

डाक रजिस्टर्ड नंबर
DL(ND)-11/6188/2025-27

वसंत पंचमी के कार्यक्रम

तिलक नगर

सेवा भारती केंद्र, तिलक नगर में वसंत पंचमी का उत्सव मनाया गया। सबसे पहले सरस्वती वंदना हुई उसके बाद श्री सोमनाथ आष्टा (अंतरराष्ट्रीय स्वर्णकार संघ के अध्यक्ष) ने दीप प्रज्ज्वलन किया। श्रीमती मोहिनी आर्य (प्रधान, आर्य समाज) ने बच्चों को वीर हकीकत राय की गाथा बताई एवं वसंत पंचमी क्यों मनाई जाती है, उसके बारे में बताया। सौभाग्य से आज श्री सोमनाथ आष्टा का जन्मदिन भी था। श्री मोहिनी आर्य ने भजन गाकर जन्मदिन की बधाई दी। पूर्व निगम पार्षद श्री यशपाल आर्य एवं श्री राकेश भटेजा (पूर्व प्रांत सेवा भारती कार्यकर्ता) ने सोमनाथ आष्टा जी को उनके जन्मदिन पर आशीर्वाद दिया। श्री सोमनाथ ने अपने जन्मदिन की खुशियां सेवा भारती के बच्चों के साथ बांटी। बच्चों को मिठाई खिलाई गई एवं सभी बच्चों को कंबल वितरित किए गए। कार्यक्रम में श्रीमती ममता खट्टर (कृष्णा पुरी निवासी) ने बच्चों को आने वाली परीक्षा के लिए शुभकामनाएं दीं एवं तैयारी के लिए रजिस्टर, पेन, पेंसिल इत्यादि वितरित की। कार्यक्रम में सभी अध्यापिकाएं एवं तिलक नगर सेवा भारती के मंत्री श्री युवराज उपस्थित रहे।

पूर्वी विभाग

वसंत पंचमी के पावन अवसर पर दिनांक 23 जनवरी को पूर्वी विभाग में सभी केन्द्रों पर विधि-विधान से सरस्वती पूजा कराई गई। इसमें शिक्षिका, निरीक्षिका एवं सेवितजन सम्मिलित हुए। बच्चों ने सज-धज कर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

रामकृष्णपुरम विभाग

माँ सरस्वती विद्यादायिनी वसंत पंचमी के अवसर पर सेवा भारती, रामकृष्णपुरम विभाग द्वारा संचालित सेवा विद्या मन्दिर एवं केशव विद्या मन्दिर, दक्षिणपुरी में बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित कर उत्सव मनाया। ❐

मुद्रक/संपादक/प्रकाशकः डॉ. शिवाली अग्रवाल द्वारा सेवा प्रकाशन न्यास के लिए 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित तथा शक्ति प्रिन्टर्स 1/3001, गली न.-16, रामनगर, मंडोली रोड, शाहदरा, दिल्ली-32, से मुद्रित।